पाठ 1

वह शक्ति हमें दो दयानिधे

यह कविता ईश्वर के प्रति भक्ति प्रस्तुत करती है। इस कविता में कवि ने कहा है कि हे भगवान! हमें इतनी शक्ति दो कि हम सच्चाई के मार्ग पर चलकर गरीब, कमज़ोर और दुखियों की सेवा कर सकें तथा अपनी मातृभूमि की सेवा करके अपना जीवन सफल बनाएँ।

इस पाठ से हम सीखेंगे

- *अच्छे गुणों का पालन करना।*
- *दूसरों की सेवा करना।*
- *गरीबों के दुखों को दूर करना।*
- *दीन-दुखी और कमज़ोर लोगों की सहायता करना।*
- *मातृभूमि पर सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार रहना।*
- *'अक्षर' और 'वर्ण' का अंतर समझना।*
- *'शब्द' के बारे में जानना।*

पाठ

वह शक्ति हमें दो दयानिधे,
कर्त्तव्य मार्ग पर डट जाएँ।
पर सेवा, पर उपकार में हम,
जग जीवन सफल बना जाएँ।।
हम दीन-दुखी निबलों-विकलों के,
सेवक बन संताप हरें।
जो हैं अटके, भूले-भटके,
उनको तारें, खुद तर जाएँ।।
छल-दंभ-द्वेष-पाखंड-झूठ,
अन्याय से निश-दिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना,
शुचि प्रेम सुधारस बरसाएँ।।
निज आन-मान-मर्यादा का,
प्रभु ध्यान रहे, अभिमान रहे।
जिस मातृभूमि पर जन्म लिया,
बलिदान उसी पर हो जाएँ।।

इनका मतलब जानिए

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
शक्ति	=	ताकत	पर सेवा	=	दूसरों की सेवा
दयानिधे	=	ईश्वर	पर उपकार	=	दूसरों का भलाई
कर्त्तव्य मार्ग	=	काम की राह पर	निबलों-विकलों	=	कमज़ोरों और दुखियों

संताप	=	दुख/कष्ट	निश दिन	=	रात-दिन
हरें	=	दूर करें	शुचि	=	पवित्र
तारें	=	मुक्ति दें	सुधा	=	अमृत
दंभ	=	घमंड	निज	=	अपना
द्वेष	=	जलन	मर्यादा	=	गरिमा/गौरव/प्रतिष्ठा
पाखंड	=	आडम्बर/दिखावा	अभिमान	=	गर्व/घमंड

भावार्थ

हे प्रभु, हमें ऐसी शक्ति दो कि हम अपने कर्त्तव्य का पालन करते रहें। दूसरों की सेवा करें। दूसरों की भलाई करें। इस तरह अपने जीवन को सफल बनाएँ।

हे प्रभु, हम सेवक बनकर गरीबों, कमज़ोरों और दुखियों की तकलीफ़ों को दूर कर सकें। जो लोग भूले-भटके हैं, उन्हें सही रास्ते पर लाएँ। उनके जीवन को अच्छा बनाएँ और अपना जीवन भी अच्छा बनाएँ।

हम किसी को धोखा न दें। घमंड न करें। किसी से वैर न करें। दिखावे से दूर रहें। कभी झूठ न बोलें। कभी किसी के साथ अन्याय न करें। इन सभी बुराइयों से रात-दिन दूर रहें। हमारा जीवन सादा रहे। हम हमेशा दूसरों पर पवित्र प्रेम का अमृत बरसाते रहें अर्थात् सभी को प्यार करें।

हे प्रभु, हम अपनी बात का ध्यान रखें। मान-मर्यादा का ध्यान रखें और इस पर गर्व करें। जिस देश में हमने जन्म लिया है, उस पर मर-मिटने को तैयार रहें।

आइए, यह भी जानें

वर्ण और अक्षर में अंतर

हिन्दी वर्ण-माला में 48 वर्ण हैं-

स्वर–अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ = 11

व्यंजन–

क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़	ढ़	त	थ	द
ध	न	प	फ	ब	भ	म	य	र	ल
व	श	ष	स	ह	= 35				

स्वर व व्यंजन मिलाकर कुल=46

ध्वनि के बोले जाने वाले रूप को 'अक्षर' कहते हैं और लिखे जाने वाले रूप को 'वर्ण'।

शब्द

एक या एक से अधिक वर्णों के मेल से बने सार्थक ध्वनि समूह को 'शब्द' कहते हैं।

शब्द दो तरह के होते हैं :

1. सार्थक शब्द
2. निरर्थक शब्द

सार्थक शब्द–वे शब्द, जिनका कोई अर्थ निकले। जैसे–जल, कारखाना, सरल, जग, हम, अपना आदि।

निरर्थक शब्द–वे शब्द, जिनका कोई अर्थ नहीं होता, निरर्थक शब्द कहलाते हैं। ऐसे शब्द सार्थक शब्दों के साथ ही आते हैं, जैसे–लोटा–बोटा, पानी–फानी, रोटी-वोटी। इनमें बोटा, फानी, वोटी शब्द निरर्थक शब्द हैं। इनका कोई अर्थ नहीं है। जबकि लोटा, पानी, रोटी शब्द सार्थक हैं। इनका अर्थ निकलता है।

अभ्यास

1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

क. इस पाठ में किस मार्ग पर डटे रहने की प्रार्थना की गई है?

.....

ख. हम अपना जीवन कैसे सफल बना सकते हैं?

.....

ग. हम दीन-दुखियों के संताप कैसे दूर कर सकते हैं?

.....

घ. इस पाठ में किन-किन बुराइयों से दूर रहने की प्रार्थना की गई है?

.....

ङ. 'शुचि प्रेम सुधा रस बरसाएँ' का मतलब लिखिए।

.....

2. पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

देश किससे बनता है? देश बनता है लोगों की मेहनत से। खेती करने से। कारखाने लगाने से। आपस में मेलजोल से। ईमानदारी से। भाईचारे से। हम मिलकर काम करेंगे तो देश तरक्की करेगा। खुशहाल बनेगा।

आज देश में कई बुराइयाँ पनपने लगी हैं। उनमें एक बड़ी बुराई है भ्रष्टाचार। स्वार्थ का बोलबाला है। लोग अपने में सिमट गए हैं। इससे देश पिछड़ने लगा है। हमें बुराइयों को रोकना होगा। अपने स्वार्थ से ऊपर उठना होगा। तभी देश आगे बढ़ेगा।

क. देश किससे बनता है?

.....

ख. देश कैसे तरक्की करेगा?

.....

ग. आज देश में बड़ी बुराई क्या है?

.....

घ. देश आगे कैसे बढ़ेगा?

.....

3. अधूरे वाक्यों को मिलाकर सही वाक्य बनाएँ–

कर्त्तव्य मार्ग पर	संताप हरें।
जग जीवन	निश-दिन दूर रहें।
सेवक बन	अभिमान रहे।
अन्याय से	सुधा रस बरसाएँ।
शुचि प्रेम	सफल बना जाएँ।
प्रभु ध्यान रहे	डट जाएँ।

4. सही शब्द छाँटकर खाली स्थान भरिए–

- वह ..... हमें दो दयानिधे। (शक्ति/भक्ति)
- पर सेवा पर ..... में हम। (अवतार/उपकार)
- जो हैं अटके ..... भटके। (फूले/भूले)
- छल-दंभ ..... पाखंड-झूठ। (द्वेष/क्लेश)
- जीवन हो शुद्ध ..... अपना। (प्रबल/सरल)

5. नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

मार्ग = ...

मर्यादा = ...

बलिदान = ...

मातृभूमि = ...

6. वर्ण किसे कहते हैं?

.....

7. अक्षर और वर्ण में अंतर बताइए।

.....

8. शब्द किसे कहते हैं?

.....

9. जिन शब्दों का अर्थ निकलता है, उन पर गोला लगाइए–

वह कअह छल खुद मकअ तर अमकुहू जन्म

10. निरर्थक शब्दों पर गोला लगाइए।

खाना–वाना, रस्सा–फस्सा, कुरसी–फुरसी, तारे–फारे, बोतल–फोतल

11. यदि कोई बूढ़ा आदमी रास्ता भूल जाए तो आप क्या करेंगे? लिखिए।

.....

.....

उत्तरमाला

1. कर्त्तव्य मार्ग। (ख) परोपकार और परसेवा करके। (ग) उनकी सेवा करके। (घ) छल-दम्भ, द्वेष-पाखंड-झूठ-अन्याय। (ङ) हम पवित्र प्रेम की अमृत धारा बरसाएँ अर्थात् हम सबसे सच्चा प्रेम करें।

2. (क) देश लोगों की मेहनत से बनता है। (ख) मिलकर काम करने से देश तरक्की करेगा। (ग) भ्रष्टाचार। (घ) बुराइयों को रोकने से तथा स्वार्थ से ऊपर उठकर।

3. कर्त्तव्य मार्ग पर डट जाएँ।
जग जीवन सफल बना जाएँ।
सेवक बन संताप हरें।
अन्याय से निश-दिन दूर रहें।
शुचि-प्रेम सुधा-रस बरसाएँ।
प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।

4. शक्ति, उपकार, भूले, द्वेष, सरल

5. स्वयं कीजिए।

6. लिखी जानेवाली सबसे छोटी इकाई।

7. ध्वनि के बोले जाने वाले रूप को 'अक्षर' कहते हैं और लिखे जाने वाले रूप को 'वर्ण'।

8. एक या एक से अधिक वर्णों के मेल से बने सार्थक ध्वनि समूह को 'शब्द' कहते हैं।

9. वह, छल, खुद, तर, जन्म।

10. वाना, फस्सा, फुरसी, फारे, फोतल।

11. सही रास्ता बताएँगे।

पाठ 2

नमक का दारोगा

मुंशी प्रेमचंद की यह कहानी नौकरी में कर्त्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी जैसे उत्कृष्ट मानव मूल्यों की स्थापना करती है। एक सरकारी कर्मचारी की विशेषताओं को उद्घाटित करती हुई इस कहानी को, आइए, पढ़ते हैं।

इस पाठ से हम सीखेंगे

- *काम के प्रति पूरा लगाव रखना।*
- *धन के लोभ में नहीं आना।*
- *ईमानदारी से काम करना।*
- *सच्चाई पर डटे रहना।*
- *भ्रष्टाचार के खिलाफ़ आवाज़ उठाना।*
- *संज्ञा और उसके भेदों को जानना।*

पाठ

नमक का नया विभाग खुला। इसके व्यापार पर रोक लग गई। लोग चोरी–छुपे नमक का व्यापार करने लगे। कोई घूस से काम निकालता तो कोई चालाकी से। अधिकारी खूब कमा रहे थे। दारोगा का पद सभी को ललचाता था।

मुंशी बंशीधर रोज़गार की तलाश में निकले। उनके बूढ़े पिता ने समझाया– घर में गरीबी है। ऐसा काम ढूँढ़ना, जहाँ ऊपरी आमदनी हो।

बंशीधर शकुन से निकले। उन्हें नमक के दारोगा की नौकरी मिल गई। उन्होंने थोड़े दिन में अपने काम से सभी को मोह लिया।

एक दिन की बात है। जाड़े की रात थी। बंशीधर मीठी नींद में थे। अचानक आँख खुली। गाड़ियों की गड़गड़ाहट सुनाई दी। वे घोड़े पर चढ़े और चल दिए। यमुना नदी के पुल पर गाड़ियाँ देखीं। डाँटकर पूछा–

– किसकी गाड़ियाँ हैं?

– पंडित अलोपीदीन की।

– कौन अलोपीदीन?

– दातागंज के।

बंशीधर चौंके। पंडित अलोपीदीन बड़े आदमी थे। वे चोरी-छिपे नमक का व्यापार करते थे।

पलक झपकते ही अलोपीदीन आ धमके। बोले– हुजूर, गाड़ियाँ कैसे रोक दीं। हम आपसे दूर नहीं हैं।

अपने मुनीम से बोले– लालाजी! दारोगाजी को एक हजार के नोट भेंट करो।

बंशीधर ने गर्म होकर कहा– एक हजार क्या, एक लाख भी मुझे सच्चे मार्ग से नहीं हटा सकते। हम उन नमक हरामों में नहीं हैं, जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेच दें।

वे धन का लालच देने लगे। फिर तो धन की बौछार करने लगे। बंशीधर टस से मस नहीं हुए। उन्होंने हुकुम दिया– जमादार! पंडितजी को हिरासत में ले लो।

दूसरे दिन अलोपीदीन कचहरी में हाजिर हुए। फैसला हुआ– अलोपीदीन बड़े

आदमी हैं। हैसियत के हैं। बंशीधर के कारण उनको कष्ट उठाना पड़ा है। बंशीधर काम में सचेत हैं। यह अच्छा है किन्तु भविष्य में ऐसी गलती न करें।

सात दिन बाद कचहरी से एक परवाना आया। बंशीधर नौकरी से हटा दिए गए। वे मुँह लटकाए घर पहुँचे। बूढ़े बाप ने सिर पीट लिया। क्रोध में बड़बड़ाते रहे। बंशीधर को कोसते रहे।

कुछ दिन बाद अचानक अलोपीदीन बंशीधर के घर पहुँचे। उन्होंने बंशीधर से अपनी जायदाद का स्थायी मैनेजर बनने के लिए प्रस्ताव रखा। बंशीधर ने उत्तर दिया– न मैं पढ़ा-लिखा हूँ और न मुझको अनुभव है। ऐसे काम के लिए किसी अनुभवी आदमी की जरूरत है।

अलोपीदीन बोले– न मुझे पढ़े-लिखे की जरूरत है और न अनुभवी की। मुझे तो ऐसा मोती मिल गया है, जिसके सामने सबकी चमक फीकी पड़ जाती है। लीजिए, दस्तखत कर दीजिए। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वो आपको नदी किनारे वाला दारोगा बनाए रखे।

बंशीधर ने काँपते हाथों से कागज पर दस्तखत कर दिए। अलोपीदीन ने बंशीधर को गले लगा लिया।

–प्रेमचंद

इनका मतलब जानिए:

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
घूस	=	रिश्वत	धन की बौछार	=	अधिक धन
आमदनी	=	कमाई	हिरासत	=	बंदी बनाना
शकुन	=	शुभ अवसर	हैसियत	=	औकात
पलक झपकना	=	कम समय में	परवाना	=	आदेश पत्र

मुँह लटकाना	=	दुखी होना	स्थायी	=	पक्का
कोसना	=	बुरा चाहना	प्रस्ताव करना	=	विचार रखना
जायदाद	=	सम्पत्ति	दस्तखत	=	हस्ताक्षर

आइए, यह भी जानें

संज्ञा

– बंशीधर शकुन से निकले।

– पंडित अलोपीदीन बड़े आदमी थे।

– वे मुँह लटकाए घर पहुँचे।

ऊपर लिखे वाक्यों में 'बंशीधर', 'अलोपीदीन', 'मुँह' और 'घर' शब्द नाम हैं।

जो शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी और भाव आदि के नाम को बताएँ, उन्हें संज्ञा कहते हैं।

बंशीधर, अलोपीदीन, मुँह और घर शब्द संज्ञा कहलाते हैं।

संज्ञा तीन प्रकार की होती है–

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
2. जातिवाचक संज्ञा
3. भाववाचक संज्ञा

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा

– यमुना नदी के पुल पर गाड़ियाँ देखीं।

– अलोपीदीन दातागंज के थे।

ऊपर लिखे वाक्यों में 'यमुना', 'अलोपीदीन' और 'दातागंज' व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं। जिन शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु के नाम का पता चलता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे–

व्यक्ति – रश्मि, राकेश, सुषमा, सुधीर आदि।

स्थान – कानपुर, जयपुर, दिल्ली, मथुरा आदि।

वस्तु – रामायण (पुस्तक), रसगुल्ला (मिठाई), आम (फल) आदि।

2. जातिवाचक संज्ञा

– नदी किनारे वाला दारोगा।

– वे घोड़े पर चढ़े।

ऊपर लिखे वाक्यों में 'नदी' और 'घोड़े' जातिवाचक संज्ञा हैं। जिन शब्दों से व्यक्ति या वस्तु की जाति विशेष का पता चलता हो, उन्हें जाति वाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे–गाड़ी, नदी, घोड़ा आदि।

3. भाववाचक संज्ञा

– कोई चालाकी से काम निकालता।

– घर में गरीबी है।

ऊपर लिखे वाक्यों में 'चालाकी' और 'गरीबी' भाववाचक संज्ञा हैं। जिन शब्दों से किसी व्यक्ति या वस्तु की गुण, दशा या भाव का पता चलता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे–

गुण – ईमानदारी, भलाई, चतुराई आदि।

दशा – जवानी, बुढ़ापा, बचपन आदि।

भाव – सुख, दुख, त्याग आदि।

इस पाठ में आए शब्दों को उनकी संज्ञा के अनुसार जानें–

व्यक्तिवाचक	*जातिवाचक*	*भाववाचक*
बंशीधर	घोड़ा	गरीबी
अलोपीदीन	गाड़ी	ईमान
यमुना	नदी	क्रोध

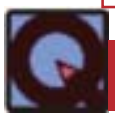

अभ्यास

1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

क. लोग चोरी-छुपे किसका व्यापार करते थे?

.....

ख. मुंशी बंशीधर किसकी तलाश में निकले?

.....

ग. यमुना नदी के पुल पर किसकी गाड़ियाँ थीं?

.....

घ. अलोपीदीन अपने मुनीम से क्या बोले?

.....

ङ. धन की बौछार होने पर भी बंशीधर ने क्या कहा?

.....

च. कचहरी में क्या फ़ैसला हुआ?

.....

छ. अलोपीदीन बंशीधर के यहाँ क्यों पहुँचे?

.....

2. नीचे लिखी कहानी पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

एक राजा जनता की भलाई चाहता था। भलाई के कामों के लिए उसने कर लगाए। कर तो लगा दिए पर खजाने में बहुत कम पैसा पहुँचता। वह इसका कारण जानना चाहता था।

एक दिन उसने सभा बुलाई। सभी सभासदों से अपने मन की बात पूछी। सभा में सन्नाटा छा गया। तभी एक व्यक्ति उठ खड़ा हुआ। उसने एक बरफ़ का टुकड़ा लिया। पास बैठे एक सभासद के हाथ में रखा और कहा– इसे आगे राजा तक पहुँचाओ। उस सभासद ने अगले के हाथ में रखा। अगले ने और अगले के हाथ में। इस तरह सबके हाथों से होता हुआ बर्फ़ का वह टुकड़ा राजा के हाथ में पहुँचा। गलते–गलते वह बर्फ़ का टुकड़ा एक चने के आकार का रह गया। राजा सब कुछ समझ गया कि उसके कर्मचारी बेईमान और भ्रष्ट हैं।

क. राजा ने प्रजा की भलाई के लिए क्या किया?

.....

ख. राजा ने सभा क्यों बुलाई?

.....

ग. एक व्यक्ति ने राजा के प्रश्न का उत्तर देने के लिए क्या तरकीब निकाली?

.....

घ. बर्फ़ का टुकड़ा चने के आकार का क्यों रह गया?

.....

3. खाली स्थान में सही शब्द छाँटकर लिखिए–

– दारोगा का पद सभी को ..... था। (ललचाता/बहकाता)

– उन्होंने अपने काम से सभी को ..... लिया। (मोह/तोड़)

– मुझे ..... मार्ग से नहीं हटा सकते। (सच्चे/कच्चे)

– बंशीधर काम में ..... हैं। (अचेत/सचेत)

– जिसके सामने सबकी ..... फीकी पड़ जाती है। (सनक/चमक)

4. नीचे लिखे शब्दों के सही जोड़े बनाइए–

चोरी	नींद
ऊपरी	आदमी
मीठी	आमदनी
बड़े	छुपे
सच्चा	वाला
मुँह	मार्ग
किनारे	लटकाए

5. शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

मोहित – .....

हिरासत – .....

जायदाद – .....

हैसियत – .....

घूस – .....

6. नीचे लिखे वाक्यों पर सही (√) या गलत (×) का निशान लगाइए–

1. नमक का पुराना विभाग खुला। ( )
2. बंशीधर मीठी नींद में थे। ( )
3. पंडित अलोपीदीन बड़े आदमी नहीं थे। ( )
4. वे धन का लालच देने लगे। ( )
5. जमादार! पंडित जी को हिरासत में मत लो। ( )

7. नीचे लिखे वाक्य किसने किससे कहे, लिखिए–

– घर में गरीबी है। ऐसा काम ढूँढ़ना, जहाँ ऊपरी आमदनी हो।

.....

– हुजूर, गाड़ियाँ कैसे रोक दीं। हम आपसे दूर नहीं हैं।

.....

– एक हजार क्या, एक लाख भी मुझे सच्चे मार्ग से नहीं हटा सकते।

.....

– परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वो आपको नदी किनारे वाला दारोगा बनाए रखे।

.....

8. नीचे लिखे शब्दों में से संज्ञा शब्द छाँटकर लिखिए–

नया, बंशीधर, समझाया, घर, मीठी, घोड़ा, यमुना, दातागंज, एक, पहुँचे

9. नीचे लिखे संज्ञा शब्दों को उनके भेद के अनुसार सही खानों में लिखिए:

आदमी नमक हैसियत मैनेजर बंशीधर पिता गाड़ी दिन क्रोध सच्चाई अलोपीदीन बुढ़ापा परमात्मा चमक यमुना

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

10. संज्ञा की परिभाषा लिखिए तथा पाँच संज्ञा शब्द लिखिए–

.....

.....

11. दिए गए चित्र के बारे में दो वाक्य लिखिए–

.....

.....

.....

उत्तरमाला

अभ्यास

1. (क) नमक (ख) रोज़गार (ग) अलोपीदीन की (घ) लाला जी! दारोगा जी को एक हज़ार के नोट भेंट कर दो। (ङ) जमादार! पंडितजी को हिरासत में ले लो। (च) बंशीधर को नौकरी से हटा दिया गया। (छ) बंशीधर को अपनी जायदाद का मैनेजर बनाने के लिए।

2. (क) राजा ने कर लगाए। (ख) खजाने में बहुत कम पैसा जमा हो रहा था। इसका कारण जानने के लिए। (ग) बर्फ़ के एक टुकड़े को एक हाथ से दूसरे हाथ में देकर आगे बढ़ाया। (घ) हर हाथ में पहुँचने से बर्फ़ का टुकड़ा पिघल गया।

3. ललचाता, मोह, सच्चे, सचेत, चमक।

4. ऊपरी आमदनी, मीठी नींद, बड़े आदमी, सच्चा मार्ग, मुँह लटकाए, किनारे वाला।

5. स्वयं कीजिए।

6. (1) × (2) √ (3) × (4) √ (5) ×

7. – बूढ़े पिता ने बंशीधर से।
   – अलोपीदीन ने बंशीधर से।
   – बंशीधर ने अलोपीदीन से।
   – अलोपीदीन ने बंशीधर से।

8. बंशीधर, घर, घोड़ा, यमुना, दातागंज।

9.

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक
नमक	आदमी	हैसियत
बंशीधर	मैनेजर	क्रोध
अलोपीदीन	पिता	सच्चाई
परमात्मा	गाड़ी	बुढ़ापा
यमुना	दिन	चमक

10. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी और भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं। श्याम, मेज, कानपुर, गाय, सच्चाई।

11. स्वयं कीजिए।

पाठ 3

शहीद भगतसिंह

इस पाठ में शहीद भगतसिंह के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला गया है। देश की आज़ादी के लिए शहीद भगत सिंह ने अंग्रेजों से लोहा लिया और अंत में हँसते-हँसते फाँसी पर चढ़ गए। स्वाधीनता संग्राम के ऐसे सपूतों को हम नमन करते हैं। आइए, भगत सिंह के जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण पहलुओं के बारे में पढ़ते हैं।

इस पाठ से हम सीखेंगे

- *शहीदे आज़म भगतसिंह के जीवन से जुड़ी घटनाएँ।*
- *देश के लिए सब कुछ बलिदान करने की भावना।*
- *देश की स्वतंत्रता की लड़ाई में शहीदे आज़म भगतसिंह का योगदान।*
- *सर्वनाम और उसके भेद।*

पाठ

एक दिन एक बालक आँगन में गड्ढा खोदकर तमंचा बो रहा था। उसके पिता के मित्र ने पूछा–"तुम यह क्या कर रहे हो?" बालक ने कहा–"मैं तमंचा बो रहा हूँ। तमंचों का झाड़ उगेगा। उसमें बहुत सारे तमंचे उगेंगे। उन तमंचों से हम अंग्रेजों से युद्ध करेंगे।" मालूम है, वह बालक कौन था? वह बालक था भगतसिंह।

भगतसिंह का जन्म 28 सितंबर, 1907 को पंजाब प्रान्त

के लायलपुर जिले के बंगा गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह और माता का नाम विद्यावती था। भगतसिंह का पूरा परिवार स्वतंत्रता संग्राम में जुटा था।

जलियाँवाला काण्ड के समय भगतसिंह बारह वर्ष के थे। इस घटना का उनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। वह अकेले ही जलियाँवाला बाग गए। वहाँ की मिट्टी का तिलक लगाया। फिर कुछ मिट्टी शीशी में भरकर घर ले आए।

भगतसिंह की उच्च शिक्षा लाहौर के राष्ट्रीय कॉलेज में हुई। यह कॉलेज देशभक्तों का गढ़ था। वहाँ पर भगतसिंह ने अपने साथियों के साथ 'नौजवान भारत सभा' का गठन किया।

बड़े भाई की मृत्यु के बाद घरवालों ने भगतसिंह पर शादी करने का दबाव डाला। इस पर उन्होंने घर छोड़ दिया। वे कानपुर चले गए। भगतसिंह का सपना तो देश की आज़ादी था। कानपुर में भगतसिंह गणेश शंकर विद्यार्थी के अखबार 'प्रताप' में लिखने लगे। वहाँ पर उन्होंने चंद्रशेखर आज़ाद और बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक आर्मी' की स्थापना की।

20 अक्टूबर, 1928 को साइमन कमीशन लाहौर आया। उसके विरोध में भगतसिंह लाला लाजपत राय के साथ जुलूस में शामिल हुए। जुलूस में शामिल लोगों पर अंग्रेज़ों ने बेरहमी से लाठीचार्ज किया। लालाजी बुरी तरह घायल हुए। बाद में वे दिवंगत हो गए। इस घटना से भगतसिंह का खून खौल उठा।

उन्होंने पुलिस अधिकारी साण्डर्स की हत्या कर लालाजी की मौत का बदला लिया। इस घटना के बाद से यह क्रान्तिकारी आन्दोलन बन गया।

अंग्रेज़ असेम्बली में 'पब्लिक सेफ़्टी बिल' लाए। इस दमनकारी बिल का भगतसिंह ने विरोध किया। उन्होंने असेम्बली में बम के दो विस्फोट किए। उन्होंने वहाँ पर 'इन्कलाब ज़िंदाबाद' के नारे लगाए। इसके विरोध में पर्चे भी फेंके। भगतसिंह का उद्देश्य जन-जन तक आज़ादी का संदेश पहुँचाना था।

भगतसिंह चाहते तो असेम्बली से भाग सकते थे लेकिन वे वहीं खड़े रहे। अंग्रेज़ पुलिस ने भगतसिंह और उनके साथियों को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया। जेल में उन्हें तरह-तरह की यातनाएँ दी गईं लेकिन भगतसिंह अपनी देशभक्ति से टस से मस नहीं हुए।

भगतसिंह पर एकतरफ़ा मुकदमा चला। उन्हें फाँसी की सज़ा सुनाई गई। बहुत से लोगों ने भगतसिंह को फाँसी की सज़ा के खिलाफ़ दया याचिका देने को कहा। लेकिन भगतसिंह बहुत साहसी और निडर थे। उन्होंने अंग्रेज सरकार से कोई समझौता नहीं किया।

23 मार्च, 1931 को आधी रात को भगतसिंह को उनके दो साथियों सुखदेव और राजगुरु के साथ फाँसी दे दी गई। भगतसिंह ने स्वयं आगे बढ़कर फाँसी के फन्दे को चूमा। उन्होंने 'भारतमाता की जय' के नारे लगाए। वे हँसते-हँसते फाँसी के फन्दे पर झूल गए।

मात्र चौबीस वर्ष की आयु में भगतसिंह देश की आज़ादी की खातिर अपने प्राण

न्यौछावर कर गए। मरणोपरांत उन्हें 'शहीदे आज़म' के खिताब से नवाज़ा गया। ऐसे देशभक्त को हम नमन करते हैं। शत-शत नमन।

इनका मतलब जानिए

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
क्रान्तिकारी	–	बदलाव लाने वाले	यातनाएँ	–	पीड़ा/तकलीफ
दिवंगत	–	मरना	टस से मस न होना	–	अपने इरादे पर कायम रहना
खून खौलना	–	गुस्सा आना	दया याचिका	–	क्षमा प्रार्थना
दमनकारी	–	अत्याचार करने वाला	खिताब	–	पदवी
विस्फोट	–	धमाका	नवाज़ा गया	–	आदर दिया गया

आइए, यह भी जानें

सर्वनाम

इस पाठ में निम्नलिखित वाक्य आए हैं–

- वह बालक तमंचा बो रहा था। (वह शब्द इस वाक्य में भगतसिंह के नाम के स्थान पर प्रयोग हुआ है।)
- उसके पिता के मित्र ने पूछा। (भगतसिंह के)
- उन्होंने मिट्टी से तिलक किया। (भगतसिंह ने)
- जिसमें लालाजी घायल हुए। (जुलूस में)
- वे भागे नहीं। (भगतसिंह)

- उनका उद्देश्य आज़ादी पाना था। (भगतसिंह का)
- उन्हें यातनाएँ दी गईं। (भगतसिंह को)

ऊपर के वाक्यों में कुछ शब्दों के नीचे लाइन लगी है। इनका प्रयोग किसी के नाम के स्थान पर हुआ है।

सर्वनाम– जो शब्द संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयोग होते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।

सर्वनाम के प्रकार– सर्वनाम छह प्रकार के होते हैं–

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम**–जिस सर्वनाम का प्रयोग किसी पुरुष के स्थान पर किया जाता है, वह पुरुष वाचक सर्वनाम कहलाता है।

   पुरुष तीन प्रकार के होते हैं–

   क. प्रथम पुरुष या उत्तम पुरुष – बात कहने वाला या काम करने वाला, जैसे – मैं, मेरा, मुझे, हमारा आदि।

   ख. मध्यम पुरुष – प्रथम पुरुष की बात को सुनने वाला अथवा करने वाला, जैसे–तू, तुम, आप, तुम्हें, तेरे, तुझे आदि।

   ग. अन्य पुरुष – जो शब्द प्रथम तथा मध्यम पुरुष के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति के लिए प्रयोग होते हैं, उन्हें अन्य पुरुष कहा जाता है, जैसे– वे, वह, उनका, उनके, उनको, उन्होंने आदि।

2. **निजवाचक सर्वनाम** – जो शब्द अपनेपन का बोध कराते हैं, उन्हें निज वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे – मैं स्वयं चला जाऊँगा।

   यह काम वे अपने आप करेंगे।

3. **निश्चयवाचक सर्वनाम** – जो शब्द किसी निश्चित स्थिति का बोध कराते हैं, वे निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे–

यह पुस्तक है।

वह मेज़ है।

ये आपके कपड़े हैं।

ऊपर के वाक्यों में जिन शब्दों के नीचे लाइन खिंची है, वे निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

4. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** – जिन शब्दों से किसी निश्चित वस्तु या नाम का बोध नहीं होता है, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे –

पानी में कुछ पड़ा है।

दरवाज़े पर कोई खड़ा है।

ऊपर के वाक्यों में 'कुछ' तथा 'कोई' अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

5. **सम्बन्धवाचक सर्वनाम** – जो शब्द किसी व्यक्ति या वस्तु से सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, उन्हें सम्बन्ध वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–

जो सोएगा, वह खोएगा।

वह मकान गिर गया, जिसमें तुम रहते थे।

ऊपर के वाक्यों में दिए शब्द 'जो', 'वह', 'जिसमें' सम्बन्ध वाचक सर्वनाम हैं।

6. **प्रश्नवाचक सर्वनाम** – जो शब्द प्रश्न के रूप में प्रयोग होते हैं, उन्हें प्रश्न वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–

वह कौन है?

तुम कहाँ जा रहे हो?

ऊपर के वाक्यों में दिए शब्द 'कौन' और 'कहाँ' प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

अभ्यास

1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

क. शहीद भगतसिंह का जन्म कहाँ हुआ था?

.....

ख. भगतसिंह के माता और पिता का नाम क्या था?

.....

ग. भगतसिंह ने घर क्यों छोड़ा?

.....

घ. भगतसिंह ने किस अंग्रेज़ अधिकारी की हत्या की थी?

.....

ङ. भगतसिंह ने बम विस्फोट कहाँ पर किया था?

.....

2. पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

सुभाष चंद्र बोस तब बच्चे थे। एक दिन माता प्रभावती की गोद से उतरकर ज़मीन पर सो गए। जब माँ ने पूछा– ''बेटा, पलंग छोड़कर भूमि पर क्यों सो गए?'' तो बालक सुभाष का उत्तर था– ''माँ, आज गुरुजी कह रहे थे कि हमारे जो पूर्वज ऋषि-मुनि थे, वे भूमि पर ही सोते थे। कठोर जीवन जीते थे। मैं भी ऋषि बनूँगा। मैं कठोर जीवन का अभ्यास कर रहा हूँ।''

पिता ने पुत्र को समझाया – ''बेटे, ज़मीन पर सोकर तुम ऋषि नहीं बन सकोगे। उसके लिए तुम्हें ज्ञान अर्जन करना पड़ेगा। बड़े होकर सेवा का व्रत भी लेना होगा।'' सुभाष चन्द्र बोस ने पिता के वचनों का पालन करते हुए कठोर परिश्रम किया। मन लगाकर पढ़ाई-लिखाई की और अंत में, आई.सी.एस. की परीक्षा पास की लेकिन उन्होंने अफ़सर का पद ठुकरा दिया और देशसेवा में लग गए।

1. सुभाष चन्द्र बोस ने बचपन में क्या किया?

.....

2. सुभाष ने ज़मीन पर सोने का क्या कारण बताया?

.....

3. पिता ने बेटे से क्या कहा?

.....

4. सुभाष ने बड़े होकर क्या किया?

.....

3. वाक्यों के सही जोड़ों को रेखा खींचकर मिलाइए–

भगतसिंह का जन्म	तमंचा बो रहे थे।
भगतसिंह ने असेम्बली में	चाहते थे।
भगतसिंह ने फाँसी के खिलाफ़	दो विस्फोट किए थे।
भगतसिंह आज़ादी	दया याचिका नहीं दी।
बालक भगतसिंह आँगन में	पंजाब प्रान्त के बंगा गाँव में हुआ था।

4. नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

- आज़ादी .....
- बलिदान .....
- साहसी .....
- आन्दोलन .....
- देशभक्त .....

5. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द छाँटकर खाली स्थान में भरिए–

- भगतसिंह आँगन में गड्ढा खोदकर ..... बो रहे थे।(तमंचा/पौधा)
- भगतसिंह को ..... के खिताब से नवाज़ा गया। (शहीदे आज़म/भारतरत्न)
- भगतसिंह ने फाँसी की सज़ा के खिलाफ ..... नहीं दी। (चिट्ठी/दया याचिका)
- असेम्बली में भगतसिंह ने ..... किए। (बम विस्फोट/हमले)
- भगतसिंह ने अंग्रेज़ अधिकारी ..... की हत्या की थी। (स्कॉट/साण्डर्स)
- जलियाँवाला बाग की मिट्टी से भगतसिंह ने ..... किया। (तिलक/पौधारोपण)

6. सही पर (√) तथा गलत पर (×) का निशान लगाइए–

- भगतसिंह को शहीदे आज़म के खिताब से नहीं नवाज़ा गया था। ( )
- भगतसिंह आँगन में तमंचा बो रहे थे। ( )
- भगतसिंह ने अपनी फाँसी की सज़ा के खिलाफ़ दया याचिका दायर नहीं की थी। ( )
- भगतसिंह को अकेले ही फाँसी दी गई थी। ( )
- इन्कलाब ज़िन्दाबाद का नारा भगतसिंह ने दिया था। ( )

7. नीचे लिखे वाक्यों में से सर्वनाम के नीचे रेखा खींचिए और उनका प्रकार लिखिए–

- मैं अपने आप चला जाऊँगा। .....
- टूटी कुर्सी कहाँ रखी है? .....
- सब बाज़ार गए हैं। .....

- वह मकान गिर गया, जिसमें तुम रहते थे। .....
- दरवाज़े पर कोई खड़ा है। .....
- यह पुस्तक आपकी है। .....

उत्तरमाला

अभ्यास

1. (क) पंजाब प्रान्त के लायलपुर जिले के बंगा गाँव में। (ख) माता– विद्यावती, पिता – सरदार किशन सिंह। (ग) घरवाले विवाह करने के लिए दबाव डाल रहे थे। (घ) साण्डर्स की। (ङ) असेम्बली में।
2. स्वयं कीजिए।
3. – भगतसिंह का जन्म पंजाब प्रान्त के बंगा गाँव में हुआ था।
   – भगतसिंह ने असेम्बली में दो विस्फोट किए थे।
   – भगतसिंह ने फाँसी के खिलाफ़ दया याचिका नहीं दी।
   – भगतसिंह आज़ादी चाहते थे।
   – बालक भगत सिंह आँगन में तमंचा बो रहे थे।
4. स्वयं करें।
5. तमंचा, शहीदेआज़म, दया याचिका, बम विस्फोट, साण्डर्स, तिलक।
6. (1) ×, (2) √, (3) √, (4) ×, (5) √
7. मैं (पुरुषवाचक)
   कहाँ (स्थानवाचक)
   सब (संख्यावाचक)
   वह (संकेतवाचक)
   तुम (पुरुषवाचक)
   कोई (अनिश्चयवाचक)
   यह (संकेतवाचक)

जाँच पत्र-1

(पाठ 1 से 3 तक)

समय-2 घंटे　　कुल अंक-40

1. सही उत्तर पर (√) का निशान लगाइए–

क. दयानिधे किसे कहा गया है?

(अ) दया का समुद्र　　(ब) दया की मूर्ति

(स) ईश्वर　　(द) दया का भंडार

ख. संताप का अर्थ है–

(अ) दुख　　(ब) बुखार

(स) ज़ुकाम　　(द) खाँसी

2. सही वाक्य पर सही (√) का तथा गलत पर (×) का निशान लगाइए–

(अ) मातृभूमि पर बलिदान के लिए हमें तैयार रहना चाहिए। ( )

(ब) पंडित अलोपीदीन बड़े आदमी नहीं थे। ( )

3. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए–

(अ) दारोगा का पद सभी को ..... था। (ललचाता/बहकाता)

(ब) जीवन हो शुद्ध ..... अपना। (प्रबल/सरल)

4. शब्दों के सही अर्थ पर सही (√) का निशान लगाइए–

अ. खिताब

किताब

बाल काले करने वाला

पदवी

इनाम

ब. आमदनी

आम की किस्म

आम देने वाला

आम आदमी

कमाई

5. अ. व्यक्तिवाचक संज्ञा पर सही (√) का निशान लगाइए–

पहाड़, हिमालय, गाय, गरीबी

ब. निम्नलिखित शब्दों में सर्वनाम शब्द पर सही का निशान लगाइए–

बालक, हरा, तुम, चलना

6. भगतसिंह आँगन में क्या बो रहे थे? (2)

.....

7. हम दीन-दुखियों के संताप कैसे दूर कर सकते हैं? (2)

.....

8. लोग चोरी-छुपे किसका व्यापार करते थे? (2)

.....

9. जिन शब्दों से जाति विशेष का पता चलता है, उन्हें कौन सी संज्ञा कहते हैं? (2)

.....

10. लिखी जाने वाली सबसे छोटी इकाई को क्या कहते हैं? (2)

.....

11. 'कर्त्तव्य मार्ग पर डट जाएँ' का क्या मतलब है? (3)

.....

12. अलोपीदीन बंशीधर के यहाँ क्यों पहुँचे? (3)

.....

13. भारत के चार क्रांतिकारियों के नाम लिखिए। (3)

.....

14. हम अपना जीवन कैसे सफल बना सकते हैं? (3)

.....

15. देश में फैले भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए हमें क्या करना चाहिए? (3)

.....

16. इन चित्रों को पहचानिए और उनके नीचे उनके नाम लिखिए– (3)

.....

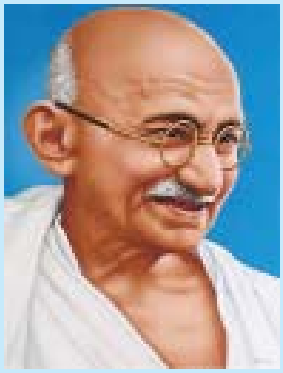

....

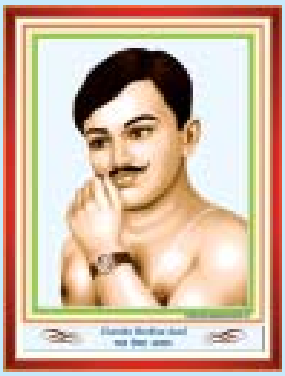

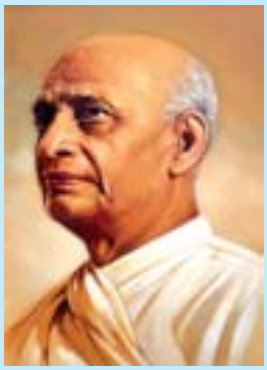

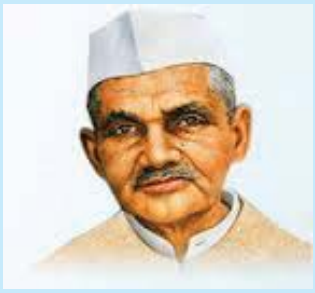

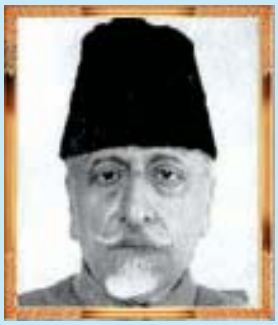

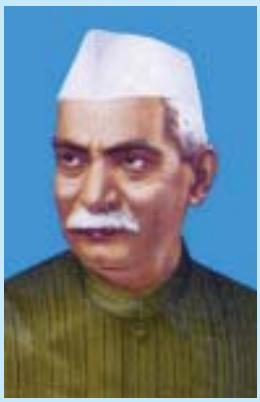

....

....

....

पाठ 4

साथी हाथ बढ़ाना

साहिर लुधियानवी द्वारा लिखी गई यह कविता सीख देती है कि साथ-साथ मिलकर काम करने से बड़ा से बड़ा और मुश्किल से मुश्किल काम भी आसानी से हो जाता है। एक दूसरे की मदद करें और सच्चाई से मेहनत करते हुए मंज़िल की ओर चलें तो कोई भी काम मुश्किल नहीं है।

इस पाठ से हम सीखेंगे:

- *मिल-जुलकर आगे बढ़ना।*
- *अच्छे कामों में एक-दूसरे को सहयोग देना।*
- *एक-दूसरे के सुख-दुख में हाथ बँटाना।*
- *सच्चाई के रास्ते पर चलना।*
- *पर्यायवाची शब्दों की जानकारी।*

पाठ

साथी हाथ बढ़ाना, साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना।
साथी हाथ बढ़ाना।

हम मेहनत वालों ने जब भी, मिलकर कदम बढ़ाया,
सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया।

फ़ौलादी हैं सीने अपने, फ़ौलादी हैं बाँहें,
हम चाहें तो चट्टानों में पैदा कर दें राहें।
साथी हाथ बढ़ाना।

मेहनत अपनी लेख की रेखा, मेहनत से क्या डरना,
कल गैरों की खातिर की, अब अपनी खातिर करना।
अपना दुख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक,
अपनी मंज़िल सच की मंज़िल, अपना रस्ता नेक।
साथी हाथ बढ़ाना।

एक से एक मिले तो कतरा, बन जाता है दरिया,
एक से एक मिले तो ज़र्रा, बन जाता है सेहरा।
एक से एक मिले तो राई, बन सकती है परबत,
एक से एक मिले तो इंसाँ, बस में कर ले किस्मत।
साथी हाथ बढ़ाना।

–साहिर लुधियानवी

इनका मतलब जानिए

शब्द		अर्थ
बोझ	=	भार
फ़ौलादी	=	मज़बूत
राह	=	रास्ता
गैर	=	पराया
खातिर	=	के लिए
नेक	=	भला
कतरा	=	बूँद
दरिया	=	नदी
ज़र्रा	=	कण/छोटा टुकड़ा
इंसाँ	=	आदमी

भावार्थ

इस पाठ में मिलकर काम करने की प्रेरणा दी गई है।

एक साथी दूसरे साथी से हाथ से हाथ मिलाकर काम करने की बात कहता है। यदि मिलकर काम करेंगे तो काम आसानी से पूरा हो जाएगा। एक अकेला तो थक जाएगा।

मेहनत करने वाले जब मिलकर काम करते हैं तो सागर भी रास्ता दे देता है। पहाड़ जैसी बाधाएँ दूर हो जाती हैं।

मेहनत करने वाले हिम्मत वाले होते हैं। उनकी बाँहें बड़ी मजबूत होती हैं।

मेहनत करने वाले चट्टानों में भी अपना रास्ता बना लेते हैं अर्थात् मुश्किलों को आसान कर लेते हैं।

मेहनत तो हमारी तकदीर में लिखी है, फिर मेहनत से क्या डरना। कल तक हमने दूसरों के लिए मेहनत की थी, आज हमें अपनी तरक्की के लिए मेहनत करनी है। हमारे सुख-दुख एक हैं। सुख में हम सुख मनाएँ और दुख में एक-दूसरे की मदद करें। हमारी मंज़िल सच्चाई की मंज़िल है। हमारा रास्ता भी सच्चाई का है। बूँद-बूँद से घड़ा भरता है। बूँद-बूँद मिलने से नदी बन जाती है। एक-एक कण से रेगिस्तान बन जाता है। एक-एक कण से पहाड़ भी बन जाता है। इसी तरह हम मिलकर काम करें तो अपनी तकदीर बदल सकते हैं।

हे साथी, अपना हाथ आगे बढ़ाओ। हम सब मिलकर काम करें।

पाठ का मूल भाव

हम एक-दूसरे को साथ लेकर मेहनत करें। हाथ बँटाने से काम सहज और आसान हो जाता है। संगठन में बड़ी शक्ति है। संगठित होकर हम आगे बढ़ें तो बड़ी से बड़ी कठिनाई से पार पा सकते हैं। एक-दूसरे के दुख में काम आ सकते हैं।

सच्चाई का रास्ता चुनकर हम मज़बूती से आगे बढ़ सकते हैं।

आइए, यह भी जानें

पर्यायवाची शब्द

इस पाठ में साथी, सागर, दरिया, पर्वत आदि शब्द आए हैं।

'साथी' शब्द के समान अर्थ वाले शब्द यार, दोस्त, मित्र, सखा आदि भी हो सकते हैं। ऐसे समान अर्थों वाले शब्दों को 'पर्यायवाची शब्द' कहते हैं।

ऐसे अनेक शब्द, जो एक समान अर्थ का बोध कराते हैं, वे पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।

इस पाठ में आए शब्दों के पर्यायवाची शब्द जानिए:

साथी	–	दोस्त, मित्र, सखा
हाथ	–	कर, हस्त, पाणि
कतरा	–	बूँद, बिंदु
दरिया	–	नदी, सरिता, तरंगिणी
इंसाँ	–	मनुष्य, आदमी, नर
किस्मत	–	भाग्य, करम
पर्वत	–	पहाड़, गिरि, अचल

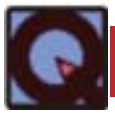

अभ्यास

1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

क. मिलकर बोझ उठाने का क्या मतलब है?

.....

ख. सागर किन लोगों के सामने रास्ता छोड़ देता है?

.....

ग. मिलकर काम करने से क्या फल मिलता है?

.....

2. पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

एक किसान था। वह कुदाली से पहाड़ खोद रहा था। उधर से ब्रह्माजी निकले। उन्होंने किसान से पूछा–''यह तुम क्या कर रहे हो?''

किसान ने उत्तर दिया–''मैं पहाड़ को यहाँ से हटा रहा हूँ। इसके कारण मेरे खेतों में पानी नहीं बरसता। बादल इससे टकराकर उस पार ही खाली हो जाते हैं।''

ब्रह्माजी हँसने लगे। बोले–''तुम इतने बड़े पहाड़ को कैसे हटा सकोगे?''

किसान ने कहा–''मैं इसे हटाकर ही दम लूँगा।'' ब्रह्माजी मुसकराए और आगे बढ़ गए।

कुछ दिन बाद पहाड़ ब्रह्माजी के पास पहुँचा। कहने लगा–''हे प्रभु, मुझे कहीं और स्थान दे दो।''

ब्रह्माजी ने पूछा–''क्या तुम किसान से डर गए हो?''

पहाड़ ने कहा–''किसान में बड़ी हिम्मत है। साहस है। उमंग है। लगन है। वह मुझे उखाड़ कर ही छोड़ेगा।''

क. किसान क्या कर रहा था?

.....

ख. ब्रह्माजी ने किसान से क्या पूछा?

.....

ग. किसान ने ब्रह्माजी को क्या उत्तर दिया?

.....

घ. पहाड़ ने ब्रह्माजी से क्या कहा?

.....

3. कविता की पंक्तियों को पूरा कीजिए–

क. एक अकेला थक जाएगा .....

ख. फ़ौलादी हैं सीने अपने .....

ग. कल गैरों की खातिर की .....

घ. एक से एक मिले तो राई .....

4. नीचे लिखे शब्दों से वाक्य बनाइए–

अ. ज़र्रा .....

ब. इंसाँ .....

स. किस्मत .....

द. सेहरा .....

5. सही वाक्य के आगे सही (√) तथा गलत वाक्य के आगे गलत (×) का निशान लगाइए–

क. एक अकेला बढ़ जाएगा। ( )

ख. हम न चाहें तो चट्टानों में पैदा कर दें राहें। ( )

ग. अपनी मंज़िल सच की मंज़िल। ( )

घ. अपना रास्ता नेक। ( )

6. नीचे लिखे हुए शब्दों के जोड़े बनाकर रेखा से जोड़िए–

1. एक अकेला	लेख की रेखा
2. मेहनत वालों ने जब	अपना सुख भी एक
3. मेहनत अपनी	चट्टानों में राहें
4. अपना दुख भी एक है साथी	मिलकर कदम बढ़ाया
5. हम चाहें तो पैदा कर दें	थक जाएगा

7. नीचे लिखे पर्यायवाची शब्दों को खाली जगह में भरिए–

भाग्य, कर, बूँद, नदी, मित्र, मनुष्य, पहाड़

साथी .....

हाथ .....

कतरा .....

दरिया .....

इंसाँ .....

किस्मत .....

पर्वत .....

8. पर्यायवाची शब्द किसे कहते हैं?

.....

.....

उत्तरमाला

अभ्यास

1. (क) मिल-जुलकर काम करना।
   (ख) मिल-जुलकर काम करने वाले लोगों के आगे।
   (ग) सभी कठिनाइयाँ दूर हो जाती हैं।
2. स्वयं कीजिए।
3. (क) मिलकर बोझ उठाना।
   (ख) फ़ौलादी हैं बाँहें।
   (ग) अब अपनी खातिर करना।
   (घ) बन सकती है परबत।
4. स्वयं करें।
5. (क) × (ख) × (ग) √ (घ) √
6. (1) मिलकर कदम बढ़ाया (3) लेख की रेखा। (4) अपना सुख भी एक (5) चट्टानों में राहें।
7. मित्र, कर, बूँद, नदी, मनुष्य, भाग्य, पहाड़।
8. ऐसे अनेक शब्द, जो एक समान अर्थ का बोध कराते हैं, वे पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।

पाठ 5

सोन पूँछी नाग

यह कहानी असम की लोककथा पर आधारित है। इस कहानी से सीख मिलती है कि लालच करने से जो अपने पास है वह भी समाप्त हो जाता है। लालच नहीं करना चाहिए तथा जो मिल रहा है उसी में संतोष करना चाहिए। आपने भी सुना होगा 'संतोषः परमं सुखम्'।

इस पाठ से हम सीखेंगे

- *बड़े परिवार में तरह-तरह के विचार होने से बहुत-सी परेशानियाँ खड़ी हो सकती हैं।*
- *बुज़ुर्गों के लिए हमारी ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं।*
- *लालच का फल हमेशा बुरा होता है।*
- *विशेषण और उसके भेदों की जानकारी।*

पाठ

बहुत पुरानी बात है। असम के एक गाँव में पुरंग नाम का एक किसान रहता था। वह बहुत गरीब था। उसकी पत्नी का नाम सुजाता था। उसके पाँच बेटे थे। बड़ा परिवार उसकी गरीबी का कारण था। पति-पत्नी दिन-रात मेहनत करते मगर गुज़ारा बड़ी मुश्किल से होता था।

किसान के पाँचों बेटे समय के साथ सयाने हो गए पर वे माँ-बाप के लिए सहारे की जगह उनके लिए सिरदर्द थे। आवारागर्दी के साथ-साथ लोगों से लड़ाई-झगड़ा करना उनकी आदत बन गई थी।

उनके व्यवहार से दुखी सुजाता ने भगवान से एक और पुत्र देने की प्रार्थना की। उसने विनती की– हे प्रभु! मुझे ऐसा पुत्र दो, जो आज्ञाकारी हो और बुढ़ापे में हमारी सेवा कर सके।

ऐसा ही हुआ। सुजाता गर्भवती हुई और समय पर उसने एक बच्चे को जन्म दिया। पर यह क्या! जन्म लेने वाला तो एक सर्प था। वह जन्म के बाद ही झाड़ियों में अदृश्य हो गया। सुजाता बहुत दुखी हुई। एक तो गर्भ से सर्प पैदा हुआ, दूसरे, पैदा होते ही वह न जाने कहाँ गायब हो गया।

धीरे-धीरे कई वर्ष बीत गए। एक रात सुजाता ने एक स्वप्न देखा– उसका सर्प बेटा उसकी गोद में सोया है। वह कह रहा है–''माँ, मैं सर्प नहीं हूँ। मैं एक राजकुमार हूँ। सर्प तो मैं ऋषि अष्टावक्र के शाप से बना हूँ। मैं उनके टेढ़े-मेढ़े शरीर को देखकर हँस पड़ा था। इससे क्रुद्ध होकर ऋषि ने मुझे सर्प बन जाने का शाप दे दिया था। अपनी इस भूल पर मुझे बहुत पछतावा है। मैं प्रतिदिन आपको एक अंगुल सोना देकर अपनी गलती सुधारना चाहता हूँ।''

सुजाता को ताज्जुब हुआ। वह बोली–''एक अंगुल सोना! पुत्र, तुम यह सोना मुझे कहाँ से दोगे?''

नाग ने उत्तर दिया–''माँ, कल से मैं प्रतिदिन आपके पास दूध पीने आऊँगा। आप घर के पास एक कटोरे में दूध रख दिया करना। मैं जब दूध पीकर जाने लगूँ तब

आप चाकू से मेरी एक अंगुल के बराबर पूँछ काट लिया करना। मेरे जाते ही पूँछ का वह टुकड़ा सोना बन जाएगा।'' अचानक सुजाता की नींद खुल गई। उसका स्वप्न भी जाता रहा।

अगले दिन सुजाता ने कटोरे में दूध रख दिया। कुछ देर बाद सचमुच उसका सर्प पुत्र वहाँ आया और दूध पीने लगा। सुजाता के हाथ में चाकू था पर वह सोच रही थी कि अपने पुत्र की पूँछ मैं कैसे काटूँ। सर्प ने जाते समय सुजाता की ओर देखा और पूँछ काटने का संकेत किया। सुजाता ने आँखों में आँसू भरकर यह कठोर कार्य किया। सर्प के जाते ही वह पूँछ का टुकड़ा सोना बन गया।

यह काम रोज़-रोज़ चलता रहा। सोने का टुकड़ा बेचने से घर की हालत सुधरने लगी। पैसा देखकर सुजाता के पुत्रों ने और अधिक आवारागर्दी करनी शुरू कर दी। नतीजा यह हुआ कि एक इंच सोने की कीमत भी अब उनके लिए कम पड़ने लगी। पुत्रों ने माँ पर दबाव बनाया– ''माँ, हमें और पैसे चाहिए। इतने पैसों में गुज़ारा नहीं होता। अब कल से सर्प की पूँछ से एक अंगुल की बजाए दो अंगुल का टुकड़ा काट लिया करो।'' माँ ने उन्हें ऐसा करने से साफ़ मना कर दिया। पर बेटे कब मानने वाले थे। अंत में उनके हठ के सामने माँ को झुकना पड़ा।

अगले दिन माँ ने सर्प की पूँछ से दो अंगुल का टुकड़ा काट लिया। पर यह क्या!

सर्प की पूँछ से रक्त की धारा फूट पड़ी। कुछ ही देर में सर्प ने तड़प-तड़पकर दम तोड़ दिया। सुजाता दर्द के मारे कराह उठी और अपना सिर पीट-पीटकर रोने लगी।

सुजाता का रोना सुनकर उनके बेटे भागे-भागे आए। मरे हुए सर्प को देखकर उन्होंने भी अपना सिर पीट लिया। बोल उठे–"हे भगवान, यह क्या हुआ! दो अंगुल सोने के लालच में एक अंगुल मिलने वाला सोना भी जाता रहा।"

–असम की लोककथा पर आधारित

इनका मतलब जानिए

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
विनती	=	प्रार्थना	क्रुद्ध	=	गुस्सा होना
आज्ञाकारी	=	बात मानने वाला	प्रतिदिन	=	रोज़
अदृश्य	=	जो दिखाई न दे, गायब	संकेत	=	इशारा
स्वप्न	=	सपना	हठ	=	ज़िद

आइए, यह भी जानें

विशेषण

इस पाठ में नीचे लिखे वाक्य आए हैं–

– बहुत पुरानी बात है।

– उनके पाँच बेटे थे।

– ऐसा पुत्र, जो आज्ञाकारी हो।

– एक बच्चे को जन्म दिया।

– कई वर्ष बीत गए।

इन वाक्यों में पुरानी, पाँच, ऐसा, एक, कई शब्द आए हैं। इन शब्दों में या तो क्रिया की या सर्वनाम की विशेषता बताई गई है। अतः ये शब्द विशेषण हैं।

संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं।

विशेषण चार प्रकार के होते हैं–

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. सार्वनामिक विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण

जिन शब्दों से संज्ञा और सर्वनाम शब्दों के गुण, दोष, रंग, रूप, आकार और दशा आदि की विशेषता प्रकट की जाती है, वे गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

जैसे–

संजय ने पीली कमीज़ पहनी है।

यहाँ पर 'पीली' विशेषण है क्योंकि इस शब्द के द्वारा कमीज़ की विशेषता बताई गई है।

इसी तरह–

मीठा आम ही दो।

कमज़ोर आदमी गिर गए।

काले बादल घिर आए।

इनमें मीठा, कमज़ोर, काले– ये सब संज्ञा की विशेषता बता रहे हैं।

कुछ गुणवाचक विशेषण–

(क) रंग – हरा, लाल, पीला, नीला, भूरा आदि।

(ख) आकार – छोटा, बड़ा, ऊँची, नीची, पतली, लम्बी, चौड़ी आदि।

(ग) गुण – अच्छा, ईमानदार, समझदार, वीर, दानी, मेहनती आदि।

(घ) दोष – बुरा, बेईमान, भ्रष्टाचारी, कामचोर आदि।

(ङ) दशा – अमीर, गरीब, रोगी, स्वस्थ, सूखा, गीला आदि।

(च) रूप – सुडौल, सुन्दर, खूबसूरत, भद्दा, अपंग आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण–

ऐसे शब्द, जो संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों की संख्या संबंधी विशेषता को प्रकट करते हैं, वे संख्यावाचक विशेषण हैं।

जैसे– तीसरा मकान अमिता का है।
जयप्रकाश ने चार टॉफ़ियाँ दीं।
संख्यावाचक विशेषण दो तरह के होते हैं–

(क) निश्चित संख्यावाचक–ऐसे शब्द, जिनसे निश्चित संख्या प्रकट होती है, जैसे– पाँच भाई, दो रसगुल्ले। इसमें 'पाँच' और 'दो' शब्द निश्चित संख्यावाचक हैं।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक– ऐसे शब्द, जिनसे निश्चित संख्या प्रकट नहीं होती है, जैसे–कुछ मज़दूर, कम छात्र। इसमें 'कुछ' और 'कम' शब्द। अनिश्चित संख्यावाचक हैं।

3. परिमाणवाचक विशेषण–

ऐसे शब्द, जिनसे संज्ञा और सर्वनाम की परिमाण संबंधी विशेषता का पता चलता है, जैसे– दो किलो आलू, तीन किलो चीनी, चाय में थोड़ी चीनी आदि। ये भी दो प्रकार के होते हैं–

(क) निश्चित परिमाणवाचक– ऐसे शब्द, जिनसे निश्चित परिमाण का पता चलता है, जैसे–तीन लीटर घी, एक मीटर कपड़ा, आधा किलो चीनी, सौ ग्राम इलायची। इन वाक्यों में तीन लीटर, एक मीटर, आधा किलो और सौ ग्राम निश्चित परिणामवाचक विशेषण हैं।

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक– ऐसे शब्द, जिनसे निश्चित माप-तौल का पता नहीं चलता है, जैसे– थोड़ा घी और डालो, जरा-सा नील लगा दो, कम पेट्रोल डलवाना, थोड़ी चीनी दे दीजिए। इन वाक्यों में थोड़ा, जरा सा, कम और थोड़ी अनिश्चित परिणामवाचक विशेषण है।

4. सार्वनामिक विशेषण–

ऐसे सर्वनाम शब्द, जिनका प्रयोग संज्ञा की विशेषता प्रकट करने के लिए किया जाता है।

जैसे– इस छात्र से कविता सुनो। वह पुस्तक चाहिए। उस छात्र ने गीत गाया। यह गमला सुन्दर है। इन वाक्यों में इस, वह, उस, यह शब्द सार्वनामिक विशेषण हैं।

अभ्यास

1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

क. पुरंग का परिवार गरीब क्यों था?

.....

.....

ख. सुजाता अपने पुत्रों से क्यों दुखी थी?

.....

.....

ग. सुजाता ने भगवान से क्या माँगा?

.....

.....

घ. राजकुमार सर्प कैसे बना?

.....

.....

ङ. सर्प सुजाता को क्या देता था?

.....

.....

च. सर्प कैसे मर गया?

.....

2. पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

छह– सात वर्ष के एक बच्चे को उसकी माँ पीट रही थी। पड़ोस की एक महिला ने आकर उसे बचाया। पूछने पर उसकी माँ ने बताया कि यह मंदिर से चढ़ौती के पैसे चुरा लाया है इसलिए पीट रही हूँ। पड़ोस की महिला ने बच्चे से प्यार से पूछा तो बच्चे ने कहा– ''माँ भी तो रोज़ ऊपर वाले चाचा जी के दूध में से दूध निकालती है और कहती है, किसी को बताना नहीं। मैंने तो आज पहली बार ही चोरी की है।'' बच्चे की माँ का मुँह लज्जा से लाल हो गया। वास्तव में बच्चे के चरित्र निर्माण में घर का वातावरण बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहता है।

क. बच्चे को उसकी माँ क्यों पीट रही थी?

.....

.....

ख. बच्चे ने चोरी करना किससे सीखा?

.....

.....

ग. बच्चों पर किसका प्रभाव पड़ता है?

.....

.....

3. खाली स्थान भरिए–

क. बड़ा परिवार पुरंग की ..... का कारण था।

ख. बच्चे माँ-बाप के सहारे की जगह उनके लिए ..... थे।

ग. क्रुद्ध होकर ऋषि ने मुझे ..... बन जाने का शाप दे दिया था।

घ. सर्प के जाते ही पूँछ का टुकड़ा ..... बन गया।

च. सुजाता दर्द के मारे ..... उठी।

4. बॉक्स क में दिए गए अधूरे वाक्यों को बॉक्स ख में दिए गए वाक्यों से मिलाकर पूरा करिए–

क्र.सं.	क	ख
1.	दोनों पति-पत्नी दिन-रात मेहनत करते	सुजाता ने भगवान से एक और पुत्र देने की प्रार्थना की।
2.	उनके व्यवहार से दुखी हो	और अधिक आवारागर्दी शुरू कर दी।
3.	अब मैं अपनी	एक अंगुल सोना भी जाता रहा।
4.	उनके पुत्रों ने	मगर गुज़ारा मुश्किल से हो पाता था।
5.	दो अंगुल सोने के लालच में	भूल सुधारना चाहता हूँ।

5. विशेषण किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

6. गुणवाचक विशेषण क्या है?

.....

.....

.....

7. परिमाणवाचक विशेषण क्या है?

.....

.....

.....

8. वाक्यों में मोटे छपे विशेषण शब्दों के भेदों के नाम लिखिए–

(क) **समझदार** दुकानदार ने ठग को पकड़ लिया। .....

(ख) **सातवीं** गली में अशोक का घर है। .....

(ग) संतोष ने **दो** लीटर तेल खरीदा। .....

(घ) दूध में **कुछ** गिर गया है। .....

(ड) **यह** पुस्तक किसी को मत देना। .....

9. नीचे लिखे विशेषण शब्दों से खाली स्थान भरिए–

छोटी, बँद-बूँद, तीनों, धार्मिक, मूर्ख, थोड़ी, गीला

(क) दीपावली ..... त्यौहार है।

(ख) ..... बहन खेल रही है।

(ग) राधा ने ..... तौलिया सुखाने के लिए डाला।

(घ) लस्सी में ..... बर्फ़ और डाल दीजिए।

(ङ) नल से ..... पानी टपक रहा है।

(च) ..... बहनें नृत्य करेंगी।

उत्तरमाला

अभ्यास

1. (क) बहुत बड़ा परिवार होने के कारण।

   (ख) उसके पुत्र आवारागर्दी के साथ-साथ लोगों से लड़ाई-झगड़ा करते थे।

   (ग) एक आज्ञाकारी पुत्र।

   (घ) ऋषि अष्टावक्र के शाप के कारण।

   (ङ) सर्प सुजाता को प्रतिदिन एक अंगुल सोना देता था।

   (च) सर्प की पूँछ से दो अंगुल का टुकड़ा काटने के कारण।

2. स्वयं कीजिए।

3. (क) गरीबी, (ख) सिरदर्द, (ग) सर्प, (घ) सोना, (च) कराह।

4. 1. मगर गुज़ारा मुश्किल से हो पाता था।

   2. सुजाता ने भगवान से एक और पुत्र देने की प्रार्थना की।

   3. भूल सुधारना चाहता हूँ।

   4. और अधिक आवारागर्दी शुरू कर दी।

   5. एक अंगुल सोना भी जाता रहा।

5. संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं।

6. जिन शब्दों से संज्ञा और सर्वनाम शब्दों के गुण, दोष, रंग, रूप, आकार और दशा आदि की विशेषता प्रकट की जाती है, वे गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

7. ऐसे शब्द जिनसे संज्ञा और सर्वनाम के परिमाण संबंधी विशेषता का पता चलता है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

8. (क) गुणवाचक

(ख) निश्चित संख्यावाचक

(ग) परिमाणवाचक

(घ) अनिश्चित संख्यावाचक

(ङ) सार्वनामिक विशेषण

9. (क) धार्मिक (ख) छोटी (ग) गीला (घ) थोड़ी (ङ) बूँद-बूँद
(च) तीनों।

पाठ 6

मणिकर्ण की यात्रा

मणिकर्ण हिमाचल प्रदेश में एक जगह है जिसकी यात्रा का वर्णन इस पाठ में किया गया है। इस पाठ में गर्म पानी का स्रोत, गुरुनानक देव का गुरुद्वारा, सोलहवीं शताब्दी का रघुनाथ जी का मंदिर तथा मणिकर्ण की कहानी दी गई है। आइए, इस नए और मनमोहक स्थान के बारे में जानें।

इस पाठ से हम सीखेंगे

- *पर्यटन के बारे में।*
- *हमारी संस्कृति के प्रतीक हमारे पर्यटन स्थल।*
- *पर्यटन स्थलों का ज्ञान।*
- *अंधविश्वास को दूर करना।*
- *क्रिया और क्रिया के भेदों के बारे में।*

पाठ

अच्छी जगहों पर घूमना मेरा शौक है। घूमने-फिरने से हमेशा नई जानकारी मिलती है। जब भी समय मिला, मैं निकल पड़ा। पिछले साल मैंने हिमाचल प्रदेश के मणिकर्ण की यात्रा की। वहाँ जाने के लिए पहले मैं बस से भूंतर गया।

भूंतर से मणिकर्ण की दूरी 29 किलोमीटर है। बस से उतरते ही टैक्सी किराये पर ले ली। टैक्सी चालक का नाम लीलाराम था। लीलाराम उसी इलाके का था। वह

बड़ा बातूनी और खुशमिजाज़ भी था। चहक-चहककर हर चीज़ के बारे में बताता जा रहा था। मणिकर्ण वाली सड़क बहुत सँकरी थी इसलिए भीड़ अधिक लग रही थी।

मणिकर्ण के लिए पार्वती नदी के साथ-साथ सड़क पर यात्रा करना बहुत रोमांचक था। नदी की ओर देखने पर डर लगता था। सँकरी सड़क होने के कारण दूसरे को रास्ता देने के लिए गाड़ी को रोकना पड़ता था। कई बार हमें गाड़ी को पीछे लौटाना पड़ा।

रास्ते में जरी नामक एक गाँव आया। लीलाराम ने बताया कि यहाँ से 10 किलोमीटर की दूरी पर ही है मणिकर्ण।

हमारी गाड़ी आगे बढ़ी। मैंने ड्राइवर से पूछा–''वहाँ दूर धुआँ क्यों उठ रहा है?''

''हम लोग मणिकर्ण पहुँच रहे हैं। विश्व के सबसे अधिक गर्म पानी के चश्मे हैं यहाँ। पास में ही पार्वती नदी का बर्फ़ीला जल बहता है। वह गर्म पानी उसमें गिरता है। धुआँ उसी से उठ रहा है।''

''तो इसमें खास क्या है? दुनिया में बहुत से हैं गर्म पानी के चश्मे! '' मैंने कहा।

लीलाराम झट से बोला–''पर सभी में गन्धक की गन्ध होती है। यहाँ का पानी गन्ध रहित है। लोग इसी गर्म पानी से भोजन पकाते हैं।''

इस तरह बातों-बातों में हम मणिकर्ण पहुँच गए। लीलाराम बोला–''मणिकर्ण एक महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थान है। वहाँ सामने गुरुद्वारा है। दूसरी तरफ रघुनाथ जी का मन्दिर। पास में ही शिव और भगवती नयना के भी मन्दिर हैं।''

ठहरने के लिए लीलाराम ने मुझे होटल में पहुँचा दिया। अच्छी-खासी सर्दी हो चुकी थी। मैंने होटलवाले से पूछा–''सुबह नहाने के लिए गर्म पानी तो मिलेगा न?''

उसने मुसकुराकर कर कहा– ''क्यों नहीं। जितना चाहिए, गर्म पानी कमरे में ही मिल जाएगा।''

कुछ देर वहाँ ठहरकर मैं गुरुद्वारे पहुँचा। वहाँ गरमागरम भोजन पकने की सुगंध आ रही थी। पास ही गरम पानी का कुंड था। उसमें आलुओं की बोरी रखी थी। आलू आराम से उबल रहे थे। कुछ लोग बड़े-बड़े पतीलों में चावल डालकर खौलते पानी में पका रहे थे।

कहा जाता है, सिखों के प्रथम गुरु नानक देव यहाँ पधारे थे। उन्होंने यहाँ के खौलते पानी से ही भोजन पकाया था। उसी परम्परा के अनुसार आज भी यहाँ निरन्तर लंगर पकता है।

गुरुद्वारे के बाद मैं रघुनाथ जी का मन्दिर देखने पहुँचा। मन्दिर के पुजारी ने बताया कि यह मन्दिर सोलहवीं शताब्दी में राजा जनक सिंह ने बनवाया था। उन्होंने अयोध्या से भगवान राम की मूर्ति मँगवाकर यहाँ स्थापित करवाई थी।

पुजारी जी ने बताया कि मणिकर्ण दो शब्दों से मिलकर बना है– मणि और कर्ण। इसका अर्थ है कर्णफूल। धार्मिक विश्वास के अनुसार एक बार भगवान शंकर और पार्वती भ्रमण करते हुए यहाँ पहुँचे। यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता उन्हें

इतनी भाई कि वे यहीं रुक गए। एक बार स्नान करते समय पार्वती जी के कान की मणि कहीं गिर गई। शिव के गण उस मणि को खोजने में असफल रहे।

जब शेषनाग को पता चला तो उन्होंने जोर से फुंकार मारी। फुंकार से खौलते हुए जल की धारा फूट पड़ी। उसमें अनेक मणियों सहित माता पार्वती की मणि भी बाहर आ गई। तभी से इस स्थान का नाम मणिकर्ण पड़ गया।

दिनभर की थकावट थी। रात में गहरी नींद आई। यहाँ से मुझे मनाली जाना था। जल्दी–जल्दी नहाने के लिए स्नानागार में घुस गया। बाहर की ठंड को ध्यान में रखते हुए मैंने पानी को छूकर देखा। अच्छा गुनगुना पानी था।

मैंने नल खोलकर बाल्टी भरी। पटरे पर नहाने के लिए बैठा। ज्यों ही मग को पानी में डाला, गर्म पानी से मेरा हाथ जल गया। इतने गर्म पानी से उबाला तो जा सकता था, नहाया नहीं। अब मुझे होटल वाले की मुसकाराहट का अर्थ भी समझ में आ गया। यह घटना मुझे सारी उम्र याद रहेगी। आप भी कभी मणिकर्ण जाएँ तो नहाने से पहले पानी की जाँच अवश्य कर लें।

इनका मतलब जानिए

शब्द		अर्थ
बातूनी	=	ज्यादा बोलने वाला
चश्मा	=	पानी का स्रोत
बर्फ़ीला	=	बहुत ठंडा
लंगर	=	भंडारा
स्नानागार	=	नहाने का स्थान

आइए, यह भी जानें

क्रिया–

ऐसे शब्द, जिनसे किसी काम के करने या होने का पता चलता है, उन्हें 'क्रिया' कहते हैं।

इस पाठ में निम्नलिखित शब्द आए हैं–

घूमना– अच्छी जगहों पर घूमना मेरा शौक है।

रोकना– दूसरों को रास्ता देने के लिए गाड़ी को रोकना पड़ता था।

पकता– आज भी यहाँ निरंतर लंगर पकता है।

पहुँचना– अगले दिन मुझे मनाली पहुँचना था।

इन शब्दों में कुछ करने का भाव है अतः ये क्रिया शब्द हैं। क्रिया का मूल रूप 'धातु' कहलाता है जैसे– चल, रोक, उठ और बैठ आदि क्रियाओं के मूल रूप चल, रोक, उठ और बैठ हैं। इसे पहचानने के लिए सामान्य रूप से 'ना' हटा दिया जाता है।

क्रिया के मुख्य दो रूप हैं– अकर्मक क्रिया और सकर्मक क्रिया।

अकर्मक क्रिया जब काम केवल कर्ता तक ही सीमित रहे, तो वह अकर्मक क्रिया होती है।

जैसे– मोहन सो रहा है। इस वाक्य में क्रिया पद 'सो रहा है' का संबंध मोहन से ही है। उसका प्रभाव किसी दूसरे पर नहीं पड़ रहा। इसलिए 'सो रहा है,' क्रियापद अकर्मक क्रिया है।

सकर्मक क्रिया जिसका काम करने वाले के अलावा किसी दूसरे पर भी असर पड़ता है, वह सकर्मक क्रिया होती है।

जैसे–राम किताब पढ़ता है। इस वाक्य में क्रियापद 'पढ़ता है' के कर्ता राम के काम का असर किताब पर भी पड़ता है क्योंकि किताब पढ़ी जाती है। अत: 'पढ़ता है' सकर्मक क्रियापद है।

अभ्यास

1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. मणिकर्ण किस राज्य में है?

.....

ख. मणिकर्ण भूंतर से कितनी दूरी पर है?

.....

ग. सिखों के प्रथम गुरु कौन थे?

.....

घ. मणिकर्ण में खौलते जल की धारा कैसे फूटी?

.....

च. रघुनाथ जी का मन्दिर किसने बनवाया था?

.....

2. पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

भगवान बुद्ध ने पीपल के वृक्ष के नीचे साधना कर ज्ञान प्राप्त किया था। वह उस वृक्ष को नमन कर रहे थे। उनके शिष्य ने पूछा–''भगवान, आप तो पूर्ण हैं, फिर इस वृक्ष को नमन क्यों कर रहे हैं?''

बुद्ध ने समझाया– ''इस वृक्ष के नीचे बैठकर मैंने साधना की। इसकी पत्तियों से मुझे शीलता मिलती रही। धूप से बचाव होता रहा। इसने मुझे सालों तक आश्रय दिया। बदले में कभी मुझसे कुछ नहीं माँगा। अतः मैं इसके प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। प्रकृति के प्रति हमें कृतज्ञ बने रहना चाहिए। वह बिना हमसे कुछ माँगे हमेशा हमें कुछ न कुछ देती रहती है। हम दूसरों के सम्मुख जितना नमन करते रहेंगे, अहंकार हमसे उतना ही दूर भागेगा।''

क. भगवान बुद्ध ने ज्ञान कहाँ प्राप्त किया था?

.....

ख. शिष्य ने भगवान बुद्ध से क्या पूछा?

.....

ग. भगवान बुद्ध उस वृक्ष के क्यों आभारी थे? कोई दो बातें लिखें।

.....

.....

घ. दूसरों को नमन करने पर कौन-सी बुराई हमसे दूर भागेगी?

.....

3. सही पर सही (√) निशान लगाइए–

अ. टैक्सी ड्राइवर का क्या नाम था? (लीलाराम / रामनेक)

ब. मणिकर्ण में कैसा पानी मिलता है? (नमकीन / गरम)

स. मैं रात को कहाँ पर ठहरा था? (मन्दिर में / होटल में)

द. पार्वती जी का कौन-सा गहना पानी में गिरा था? (पाजेब / कान की मणि)

4. क्रिया किसे कहते हैं?

.....

5. नीचे दिए गए वाक्यों में आए क्रिया शब्दों के नीचे लाइन खींचिए–

अ. लड़कों ने शरारत से स्कूल में छुट्टी की घंटी बजा दी।

ब. मैं नहाने के लिए पटरे पर बैठा।

स. गरम पानी से मेरा हाथ जल गया।

द. पुजारी जी ने मन्दिर के बारे में बताया।

य. लीलाराम निरन्तर बोलता जा रहा था।

र. किरन ने अखबार पढ़ना जारी रखा।

ल. झरना नदी में गिरता रहा होगा।

व. किताबों को अलमारी में रखना चाहिए।

आइए, करके देखें

किसी पर्यटन स्थल की अपनी यात्रा के अनुभव अपने साथियों को सुनाइए।

उत्तरमाला

1. क. हिमाचल प्रदेश ख. 29 किलोमीटर
   ग. गुरु नानक घ. शेषनाग की फुंकार से
   ङ. राजा जनक सिंह ने
2. स्वयं कीजिए।
3. अ. लीलाराम ब. गरम
   स. होटल में द. कान की मणि
4. ऐसे शब्द, जिनसे किसी काम के करने या होने का पता चलता है, उन्हें क्रिया कहते हैं।
5. अ. बजा दी ब. बैठा स. जल गया
   द. बताया य. बोलता जा रहा था र. पढ़ना, रखना
   ल. गिरता रहा होगा व. रखना

जाँच पत्र - 2

(पाठ 4 से 6 तक)

समय-2 घंटे

कुल अंक 40

1. पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

एक पंडित जी कई वर्षों तक काशी में शास्त्रों का गहन अध्ययन करके गाँव लौटे। एक किसान ने पूछा– ''पंडित जी, पाप का गुरु कौन है?''

पंडित जी चकरा गए। उन्हें लगा कि अध्ययन अभी अधूरा है। वे फिर काशी लौटे मगर उन्हें सवाल का जवाब नहीं मिला।

एक दिन उनकी मुलाकात एक वेश्या से हो गयी। पंडित जी ने उसे समस्या बता दी। वेश्या बोली–''इसका तो जवाब बहुत आसान है लेकिन इसके लिए आपको कुछ दिन मेरे पड़ोस में रहना होगा।''

पंडित जी ने वहीं पास में अपने रहने की व्यवस्था कर ली। पंडित जी किसी के हाथ का बना खाना नहीं खाते थे। अपना खाना खुद ही बनाते थे। वेश्या बोली– ''पंडित जी, आपको खाना बनाने में बहुत तकलीफ़ होती है, कहो तो नहा-धोकर आपका खाना मैं बना दिया करूँ। आप सेवा का मौका देंगे तो दक्षिणा में पाँच स्वर्ण मुद्राएँ भी प्रतिदिन आपको मिलेंगी।''

स्वर्ण मुद्राओं का नाम सुनकर पंडित जी को लोभ आ गया। पहले दिन ही वेश्या ने अच्छे-अच्छे पकवान बनाए और पंडित जी को परोसे पर ज्यों ही वे खाने को हुए, सामने से थाली खींच ली।

पंडित जी ने कहा– ''यह क्या मज़ाक है!''

''यह आपके प्रश्न का उत्तर है। यहाँ आने से पहले आप किसी के हाथ का

पानी भी नहीं पीते थे मगर स्वर्ण मुद्राओं के लोभ में आपने मेरे हाथ का बना खाना भी स्वीकार कर लिया, यह लोभ ही पाप का गुरु है। कोई लोभ न करे तो कोई पाप करेगा ही क्यों।'' वेश्या ने कहा।

1. किसान ने पंडित जी से क्या पूछा?

.....

2. पंडित जी की मुलाकात किससे हुई?

.....

3. पंडित जी खाना खाने को क्यों तैयार हो गए?

.....

4. वेश्या ने पंडित जी के प्रश्न का क्या उत्तर दिया?

.....

2. सही उत्तर पर (√) का निशान लगाइए–

क. मिल-जुलकर काम करने से क्या होगा?

अ. काम अधूरा रह जाएगा　　ब. आपस में झगड़ा होगा

स. काम आसानी से पूरा होगा　　द. काम खराब हो जाएगा।

ख. मणिकर्ण किस प्रदेश में है?

अ. उत्तर प्रदेश　　ब. हिमाचल प्रदेश

स. मध्य प्रदेश　　द. अरुणाचल प्रदेश

3. सही वाक्य पर (√) का तथा गलत पर (×) का निशान लगाइए–

अ. लालची आदमी को एक दिन पछताना पड़ता है। ( )

ब. मेहनत करने वाले हमेशा दुखी रहते हैं। ( )

4. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए–

अ. सुजाता के पाँचों पुत्र ..... थे। (आवारा/होनहार)

ब. मणिकर्ण में सबसे अधिक गर्म पानी के ..... हैं।) (तालाब/चश्मे)

5. शब्दों के सही अर्थ पर (√) का निशान लगाइए–

दरिया = छोटी दरी नदी मीठा दलिया देर करने वाला

लंगर = लँगड़ाकर चलने वाला लंगूर भण्डारा झगड़ा–झंझट

6. सही उत्तर पर (√) का निशान लगाइए–

क. इनमें से विशेषण शब्द कौन–सा है?

अ. कानपुर ब. सुन्दर स. वह द. रेलगाड़ी

ख. इनमें से क्रिया शब्द कौन–सा है?

अ. पढ़ना ब. हरा–भरा स. मोटापा द. गहरा

7. हाथ बँटाने का मतलब क्या है?

.....

8. सर्प की दो अंगुल पूँछ काटने से क्या हुआ?

.....

9. मणिकर्ण किस नदी के किनारे पर बसा है?

.....

10. संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्या कहते हैं?

.....

11. क्रिया के दो रूप कौन-कौन से हैं?

.....

12. मणिकर्ण में गुरुद्वारे में आलू और चावल कैसे पकाए जा रहे थे?

.....

13. आपस में मिल-जुलकर न रहने या आपस में फूट होने से क्या नुकसान हैं?

.....

14. पर्यायवाची शब्द किन्हें कहते हैं?

.....

15. मणिकर्ण का यह नाम कैसे पड़ा? इसकी कथा 6-7 पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

पाठ 7

एक वोट की कीमत

यह एक नाटक है जिसमें बताया गया है कि 18 साल की उम्र में सबको वोट देने का अधिकार है। हम सबको वोट अवश्य डालना चाहिए। सही प्रत्याशी को वोट दें क्योंकि लोकतंत्र में हमारे द्वारा चुना गया प्रत्याशी ही देश को चलाता है।

इस पाठ से हम सीखेंगे

- *मताधिकार क्या है।*
- *मत देने का अधिकार किसे है।*
- *मत या वोट देना क्यों ज़रूरी है।*
- *हमें कैसे प्रतिनिधि चुनने चाहिए।*
- *क्रिया विशेषण के बारे में।*

पाठ

(काकी लाठी टेककर घर की ओर जा रही हैं। रास्ते में रमेश, राजू और प्रकाश बैठे हैं।)

रमेश– क्यों काकी, लगवा आई उँगली में स्याही।

काकी– हाँ, स्याही भी लगवा आई और वोट भी दे आई पर तुम यहाँ बैठे क्या कर रहे हो? वोट डालने नहीं गए!

रमेश– क्यों काकी! हमारे पास और काम नहीं है क्या?

काकी– होंगे बेटा, बहुत से काम होंगे। पर आज के दिन सबसे ज़रूरी काम वोट डालने का है, जो तुमने नहीं किया।

राजू– तुम तो वोट दे आई न। हमारे वोट न देने से क्या बिगड़ जाएगा।

काकी– बहुत कुछ बिगड़ जाएगा। हमारे एक-एक वोट से ही तो सरकार बनती है। 18 साल की उम्र पूरी कर चुके हर नागरिक को वोट देने का अधिकार है। बस, वह पागल या दिवालिया न हो। अगर सब तुम्हारी तरह सोचने लगें तो कैसे चुने जाएँगे अच्छे लोग! कैसे बनेगी अच्छी सरकार! कैसे चलेगा यह लोकतंत्र!

(सामने से मास्टर जी आते हैं।)

मास्टर जी– लोकतंत्र को क्या हुआ काकी?

काकी– अभी तो कुछ नहीं हुआ बेटा, पर अगर हर नौजवान इनकी तरह सोचने लगे तो...

मास्टर जी– क्या किया इन्होंने?

काकी– वोट डालने नहीं गए। कहते हैं, इसकी ज़रूरत क्या है।

रमेश– ठीक तो कहते हैं। आप तो हमेशा ही वोट देती हैं। फिर भी हालत देखी है देश की!

मास्टर जी– देखो रमेश, काकी ठीक कहती हैं। वोट हम सबको जरूर देना चाहिए। ग्राम पंचायत हो या संसद, सभी जगह हमारे वोट से ही प्रतिनिधि चुने जाते हैं। ये प्रतिनिधि ही देश चलाते हैं। हम जैसे प्रतिनिधि चुनेंगे, वैसी ही सरकार बनेगी। वैसी ही पंचायत बनेगी।

काकी– अच्छे प्रतिनिधि चुनने की कोशिश तो हम कर ही सकते हैं। वोट उसे ही दें, जो योग्य हो, ईमानदार हो, साफ़-सुथरी छविवाला हो।

मास्टर जी– और अगर कोई भी उम्मीदवार ठीक न लगे तो हमें यह कहने का भी अधिकार है। हम मतदान केन्द्र पर जाकर फ़ॉर्म 17-ए की माँग कर सकते हैं। उस पर हम लिख सकते हैं कि हम किसी भी उम्मीदवार को वोट नहीं दे रहे हैं। पर हमें अपने अधिकार का इस्तेमाल ज़रूर करना चाहिए।

राजू– पर अगर दो-चार लोग वोट नहीं डालेंगे तो क्या फ़र्क पड़ेगा।

मास्टर जी– फ़र्क पड़ेगा। कभी-कभी एक वोट से ही सरकार गिर जाती है। एक वोट से हार-जीत तय होती है।

प्रकाश– ठीक है। अगर ऐसी बात है तो हम वोट ज़रूर डालेंगे। चलो रे सब।

काकी– ज़रूर जाओ। लेकिन वोट अपनी समझ से ही देना, किसी के बहकावे में आकर नहीं। न ही किसी लालच या डर से।

(रमेश, राजू और प्रकाश तेजी से चल पड़ते हैं।)

इनका मतलब जानिए:

लोकतंत्र	=	जनता का शासन
प्रतिनिधि	=	वे लोग, जिन्हें हम चुनकर भेजते हैं
उम्मीदवार	=	वे व्यक्ति, जो चुनाव में खड़े होते हैं

आइए, यह भी जानें

क्रिया विशेषण

इस पाठ में नीचे लिखे वाक्य आए हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए–

- काकी घर की ओर जा रही हैं।
- आप तो हमेशा ही वोट देती हैं।
- राजू, रमेश और प्रकाश तेज़ी से चल पड़ते हैं।

आप जानते हैं, इन वाक्यों में 'जा रही हैं,' 'वोट देती हैं' और 'चल पड़ते हैं' क्रिया पद हैं। यहाँ पद का मतलब है– दो-तीन शब्दों का समूह। इन क्रिया पदों के पहले इनकी विशेषता बताने वाले पद भी हैं, ये हैं 'घर की ओर', 'हमेशा', और 'तेज़ी से'। क्रिया की विशेषता बताने वाले इन पदों को क्रिया विशेषण कहते हैं।

क्रिया पदों की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'क्रिया विशेषण' कहते हैं।

क्रिया विशेषण के कुछ और उदाहरण देखिए–

- वह धीरे-धीरे चल रहा है।
- माँ दो घंटे से खाना बना रही हैं।
- पिता जी छत पर लेटे हैं।

क्रिया विशेषण चार प्रकार के होते हैं–

1. स्थानवाचक क्रिया विशेषण

   क्रिया का स्थान या दिशा बताने वाले शब्द 'स्थानवाचक क्रिया विशेषण' कहे जाते हैं, जैसे–

   - वह सड़क पर दौड़ रहा है।
   - माँ आँगन में झाड़ू लगा रही हैं।
   - सूरज पूरब से निकलता है।

- मास्टरजी इधर आ रहे हैं।

2. कालवाचक क्रिया विशेषण

क्रिया का समय, अवधि या निरन्तरता बताने वाले शब्द 'कालवाचक क्रिया विशेषण' कहलाते हैं, जैसे–

- वह रोज सवेरे टहलने जाता है।
- रामदीन दिनभर खेत जोतता रहा।
- तुम बार-बार गलती करते हो।

3. परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

क्रिया पदों का आकार या वज़न बताने वाले शब्द 'परिमाणवाचक क्रिया विशेषण' कहलाते हैं, जैसे–

- वह बहुत बोलता है।
- मैंने दो गिलास दूध पिया।
- मैं आधी किताब पढ़ चुका हूँ।

4. रीतिवाचक क्रिया विशेषण

क्रिया की रीति बताने वाले शब्द 'रीतिवाचक क्रिया विशेषण' कहलाते हैं, जैसे–

- वह ध्यानपूर्वक पढ़ रहा है।
- तुम धीरे-धीरे चल रहे हो।
- वह एकाएक गाने लगा।

अभ्यास

1. पाठ के आधार पर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

- काकी कहाँ से लौट रही थीं?

.....

- वोट देने के लिए कम से कम उम्र कितनी होनी चाहिए?

  .....

- हमारे देश का शासन चलाने वाले प्रतिनिधि कैसे चुने जाते हैं?

  .....

- वोट कैसे उम्मीदवार को देना चाहिए?

  .....

2. पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

वोट देना हमारा अधिकार भी है और कर्त्तव्य भी। हमें अपने वोट का सही इस्तेमाल करना चाहिए। जाति और धर्म के बजाय हम उम्मीदवार की योग्यता और छवि देखकर वोट दें। वोटर लिस्ट में नाम होने पर ही हम वोट दे पाएँगे इसलिए वोटर लिस्ट में अपना नाम ज़रूर लिखवाएँ। जो पिछली एक जनवरी तक 18 वर्ष के हो चुके हैं, वे वोटर लिस्ट में शामिल हो सकते हैं। मतदाताओं को जागरूक करने के लिए 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया जाता है।

- वोट देने के लिए किस लिस्ट में नाम होना ज़रूरी है?

  .....

- राष्ट्रीय मतदाता दिवस किस दिन मनाया जाता है?

  .....

- वोट देने के लिए उम्मीदवार को किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए?

  .....

3. रेखा खींचकर सही जोड़े मिलाइए–

वोट डालने के लिए कम से कम उम्र	हमारा अधिकार और कर्त्तव्य
लोकतंत्र	फ़ॉर्म 17-ए भरें
वोट देने के लिए	18 वर्ष
अच्छा उम्मीदवार	वोटर लिस्ट में नाम होना ज़रूरी
कोई भी उम्मीदवार ठीक न लगे तो	जनता का शासन
वोट देना	साफ़-सुथरी छवि, ईमानदार, योग्य

4. नीचे के वाक्य में क्रिया विशेषण वाले शब्दों के नीचे लाइन खींचिए–

- चीता तेज दौड़ता है।
- वह जल्दी-जल्दी खाना खा रहा है।
- वह बेमतलब इधर-उधर घूम रहा है।
- आज मैंने बहुत चाय पी।

5. क्रिया विशेषण किसे कहते हैं?

.....

6. आप कैसे उम्मीदवार को वोट देना चाहेंगे? कम से कम 5-6 वाक्यों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

करके देखिए

- किताब से पढ़कर या जानकार लोगों से पूछकर पता करें कि देश का शासन कैसे चलता है। खुद भी जानें और दूसरों को भी बताएँ।

अब यह भी जानिए

- वोटर कार्ड बनवाने के लिए ये चीज़ें जमा करनी होती हैं–
  - हाल ही में खींची गई दो रंगीन फ़ोटो
  - पहचान पत्र
  - पते का प्रमाण
- पते के निम्नलिखित प्रमाण पत्र मान्य होते हैं–
  - किसी राष्ट्रीयकृत बैंक के खाते की पासबुक
  - पोस्ट ऑफ़िस के खाते की पासबुक
  - राशन कार्ड/पासपोर्ट/ड्राइविंग लाइसेंस
  - पानी/बिजली/टेलीफ़ोन/गैस कनेक्शन का बिल, जिस पर आपके घर का पता लिखा हो।

    यदि बिल माता या पिता के नाम पर हो तो बच्चों के लिए भी ये मान्य होंगे।
- मतदाता की सुविधा के लिए कई तरह के फ़ॉर्म बनाए गए हैं। ये हैं–
- फ़ॉर्म 6
  - मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने और पहचान पत्र बनवाने के लिए।
  - पता बदलने के लिए– यदि पता एक विधानसभा क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र के लिए बदलना हो।

- **फ़ॉर्म 7**
  - मतदाता सूची से नाम कटवाने के लिए।
  - किसी शिकायत के लिए।
- **फ़ॉर्म 8**
  - बने हुए मतदाता पहचान पत्र में संशोधन करवाने के लिए।
- **फ़ॉर्म 8ए**
  - यदि अपने ही विधानसभा क्षेत्र के अन्दर पता बदला हो ताकि नए पते पर मतदाता पहचान पत्र बन सके।
- **ध्यान रखें कि–**
  - फ़ॉर्म 6 का कॉलम 4 भरना ज़रूरी है। इसमें आवेदन करने वाले को अपना पुराना पता बताना होता है।
  - मतदाता पहचान पत्र वाले फ़ॉर्म में यह बताना जरूरी है कि पहले पहचान पत्र बना था या नहीं।
  - 18 से 21 साल तक के मतदाता को उम्र का प्रमाण भी जमा करना होगा।

उत्तरमाला

1.
   - वोट डालकर
   - 18 साल
   - हमारे वोट से
   - योग्य, ईमानदार, साफ़-सुथरी छवि वाले उम्मीदवार को
2.
   - स्वयं कीजिए।

3. वोट डालने के लिए कम से कम उम्र
18 वर्ष

लोकतंत्र	–	जनता का शासन
वोट देने के लिए	–	वोटर लिस्ट में नाम ज़रूरी
अच्छा उम्मीदवार	–	साफ़-सुथरी छवि, ईमानदार, योग्य
कोई भी उम्मीदवार ठीक न लगे तो	–	फ़ॉर्म 17ए भरें
वोट देना	–	हमारा अधिकार और कर्त्तव्य

4.
- तेज
- जल्दी-जल्दी
- इधर-उधर
- बहुत

5. क्रिया पदों की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रिया विशेषण कहते हैं।

पाठ 8

दोहे

इस पाठ में वृंद, मलूकदास और रविदास के दोहों से सामाजिक बुराइयों को दूर करने की सीख मिलती है। इसके दर्शाया गया है कि ईश्वर एक है, सभी धर्म समान है। अच्छा कर्म करने से इनसान अच्छा बनता है किसी जाति या धर्म से नहीं। एकता, विनयशीलता, सज्जनता इनसान को अच्छा बनाते हैं।

इस पाठ से हम सीखेंगे

- *विद्या और ज्ञान के क्या फ़ायदे हैं।*
- *अभ्यास का क्या महत्त्व है।*
- *अपने साधन, मेहनत और समय का उपयोग कैसे करें।*
- *महानता के क्या लक्षण हैं।*
- *पेड़-पौधों को क्यों नहीं काटना चाहिए।*
- *जाति-पाँति, ऊँच-नीच का भेदभाव क्यों नहीं करना चाहिए।*
- *विलोम शब्द क्या हैं।*

पाठ

वृंद के दोहे

सरसुति के भंडार की, बड़ी अपूरब बात।
ज्यौं खरचै, त्यौं-त्यौं बढ़ै, बिन खरचे घटि जात।।

भावार्थ : सरस्वती, अर्थात् विद्या-धन बड़ा ही अनोखा है। इसको जितना आप खर्च करेंगे, उतना ही बढ़ता जाएगा। न खर्च करने से उसमें कमी आती जाती है। कहने का मतलब यह है कि ज्ञान बाँटने से बढ़ता है इसलिए उसे दबाकर न रखें।

करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निशान।।

भावार्थ : अभ्यास करने से धीरे-धीरे सारा काम सम्भव हो जाता है। जड़ बुद्धि व्यक्ति भी अभ्यास करते-करते ज्ञानी हो जाता है। ठीक उसी तरह, जैसे बार-बार रस्सी से घिसते-घिसते कुएँ की पक्की जगत पर भी निशान बन जाता है। मतलब यह कि कोई भी काम सीखना असम्भव नहीं है। वही काम बार-बार लगातार करने से अवश्य ही सफलता मिलती है।

कन-कन जोरे मन जुरै, काढ़े निबरै होय।
बूँद-बूँद ज्यों घट भरै, टपकत रीतै तोय।।

भावार्थ : एक-एक कण जोड़ने से कोई चीज़ धीरे-धीरे मनभर हो जाती है। वही चीज़ एक-एक कण निकालते रहने से खत्म हो जाती है। एक-एक बूँद पानी इकट्ठा होने से धीरे-धीरे घड़ा भर जाता है। वही घड़ा एक-एक बूँद पानी टपकते रहने से खाली हो जाता है। अर्थात् कोई भी चीज़ थोड़ा-थोड़ा करके बहुत हो जाती है। वही चीज़ थोड़ा-थोड़ा खर्च करने से खत्म हो जाती है इसलिए किसी भी चीज़ के एक-एक कण की कद्र करें। उसे व्यर्थ न जाने दें।

क्यों कीजै ऐसो जतन, जा ते काज न होय।
परबत पर खोदै कुआँ, कैसे निकरै तोय।।

भावार्थ : ऐसे काम में अपनी ताकत और समय नष्ट न करें, जिससे कोई नतीजा न निकले। ऊँचे पहाड़ पर कुआँ खोदने से पानी नहीं मिलता। पूरी मेहनत बेकार जाती है। अर्थात् अपनी मेहनत, ताकत और कोशिश का सही-सही इस्तेमाल करें।

मलूकदास के दोहे

दया धरम हिरदै बसै, बोलै अमृत बैन।
तेई ऊँचे जानिये, जिनके नीचे नैन।।

भावार्थ : जिसके हृदय में दया और धर्म है, मीठे वचन बोलता है, हमेशा अपनी आँखें नीची रखता है अर्थात् जिसके अन्दर घमंड बिल्कुल नहीं है, वही महान कहा जाता है।

गर्व भुलाने देह के, रचि-रचि बाँधे पाग।
सो देही नित देखि के, चोंच सँवारे काग।।

भावार्थ : जिस शरीर पर तुम इतना गर्व करते हो, खूब सजाते-सँवारते हो, उसी शरीर को देख-देखकर कौवा रोज़ अपनी चोंच सँवारता है। अर्थात् यह शरीर तो नाशवान है, फिर इस पर घमंड कैसा?

हरी डाल न तोड़िये, लागे छूरा बान।
दास मलूका यों कहैं, अपना सा जिय जान।।

भावार्थ : मलूकदास जी कहते हैं कि हरी-भरी डाल न काटिए। इससे पेड़ को बहुत दर्द होता है। बिलकुल वैसे ही, जैसे तुम्हें ज़रा सी चोट लगने पर पीड़ा होती है। पेड़ों में भी जान होती है। उन्हें अपने जैसा ही जानो।

संत रविदास के दोहे

मंदिर मस्जिद एक हैं, इन मँह अंतर नाहिं।
रविदास राम रहमान का, झगड़उ कोऊ नाहिं।।

भावार्थ : रविदास जी कहते हैं कि मंदिर-मसजिद दोनों एक हैं। इनमें कोई अंतर नहीं है। दोनों में ही ईश्वर का वास है। इसलिए राम-रहमान का कोई झगड़ा नहीं है। हम व्यर्थ ही मंदिर-मसजिद के नाम पर झगड़ा करते हैं।

जाति-पाँति के फेर मँहि, उरझि रहइ सब लोग।
मानवता कूँ खात है, रविदास जात का रोग।।

भावार्थ : रविदास जी कहते हैं कि लोग व्यर्थ में जाति-पाँति के फेर में उलझे हुए हैं। जाति-पाँति का भेदभाव रोग की तरह है, जो मानवता का नाश कर रहा है।

रविदास जनम के कारने, होत न कोऊ नीच।
नर कूँ नीच करि डारै, ओछो करम की कीच।।

भावार्थ : रविदास जी कहते हैं कि कोई व्यक्ति जन्म से नीच या छोटा नहीं होता। मनुष्य अपने नीच कर्मों की वजह से ही नीच होता है। अर्थात् कोई व्यक्ति ऊँचा या नीचा अपने अच्छे-बुरे कर्मों की वजह से होता है, जाति की वजह से नहीं।

जब सब करि दोइ हाथ पग, दोइ नैन दोइ कान।
रविदास पृथक कैसे भये, हिंदू-मूसलमान।।

भावार्थ : रविदास जी कहते हैं कि जब सभी के दो हाथ, दो पैर, दो आँखें और दो कान हैं, तो हिन्दू और मुसलमान में भेद कैसा? ईश्वर ने सबको एक जैसा बनाया है। जब उसने कोई भेद नहीं किया तो हम क्यों करते हैं?

इनका मतलब जानिए

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
सरसुति	=	सरस्वती, विद्या	रीतै	=	खाली होना
अपूरब	=	अनोखी, अनोखा	तोय	=	पानी
जड़मति	=	अज्ञानी	जतन	=	कोशिश
रसरी	=	रस्सी	परबत	=	पहाड़
सिल	=	पत्थर	गर्व	=	घमंड
निबरै	=	कम होना	फेर	=	चक्कर

उरझि	=	उलझना	कीच	=	कीचड़
ओछो	=	नीच	पग	=	पैर
करम	=	काम	पृथक	=	अलग

आइए, यह भी जानें

विलोम शब्द

इस पाठ में अमृत, नीच, बड़ी, हरी जैसे शब्द आए हैं। इन शब्दों का उल्टा अर्थ देने वाले शब्द इस प्रकार होंगे–

अमृत	–	विष
नीच	–	ऊँच
बड़ी	–	छोटी
हरी	–	सूखी

ये शब्द एक-दूसरे के विलोम हैं। विलोम का मतलब है, उलटा अर्थ देने वाला।

किसी शब्द का उलटा अर्थ देने वाला शब्द उसका 'विलोम' शब्द कहलाता है।

विलोम शब्दों के कुछ और उदाहरण देखिए–

खाली	–	भरा
विद्वान	–	मूर्ख
गरम	–	ठंडा
सच्चा	–	झूठा
हल्का	–	भारी
शुद्ध	–	अशुद्ध
ज्ञानी	–	अज्ञानी
अच्छा	–	बुरा

अभ्यास

1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) ऐसा कौन-सा धन है, जो खर्च करने से बढ़ता है?

.....

(ख) 'बूँद-बूँद कर घट भरै' का क्या मतलब है?

.....

(ग) पहाड़ पर कुआँ खोदने से क्या होगा?

.....

(घ) हरी डाल क्यों नहीं काटनी चाहिए?

.....

(ङ) कोई व्यक्ति ऊँचा या नीचा कैसे बनता है?

.....

2. पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

कबीरदास एक समाज सुधारक कवि थे। वे कपड़ा बुनने का काम करते थे। पद और दोहे बनाकर उन्हें गाते और गुनगुनाते थे। कबीर को हिन्दू और मुसलमान दोनों ही धर्म के लोग मानते थे। कबीर धार्मिक ढकोसलों और अंध विश्वासों के विरोधी थे। इसके लिए उन्होंने हिन्दू-मुसलमान दोनों को फटकारा है। कबीर के नाम पर ही कबीर पंथ चल पड़ा। उनके अनुयायी 'कबीर पंथी' कहे जाते हैं। कबीर के पद और दोहे आज भी समाज का मार्गदर्शन कर रहे हैं। उनके पद और साखियाँ लोक जीवन में रचे-बसे हैं।

क. कबीर कैसे कवि थे?

.....

ख. कबीर क्या करते थे?

.....

ग. कबीर किसके विरोधी थे?

.....

घ. उनके नाम पर कौन-सा पंथ बना?

.....

3. नीचे लिखे शब्दों को उनके सही अर्थों से मिलाइए–

सरसुति	–	पहाड़
सिल	–	कीचड़
तोय	–	अलग
परबत	–	चक्कर
ओछो	–	विद्या
कीच	–	पत्थर
फेर	–	पानी
पृथक	–	नीच

4. नीचे लिखी पंक्तियों को पूरा कीजिए–

(अ) रसरी आवत जात ते ..... ।।

(ब) तेई ऊँचे जानिए, जिनके ..... ।।

(स) हरी डाल न तोड़िये, लागै ..... ।।

(द) रविदास पृथक कैसे भये, ... ।।

5. नीचे लिखे वाक्यों की खाली जगह में सही शब्द चुनकर भरिए–

(क) विद्या का धन बड़ा ही ..... है। (धोखा/अनोखा)

(ख) पहाड़ पर कुआँ खोदने से पानी नहीं ..... । (निकलता/उबलता)

(ग) मंदिर–मस्जिद दोनों में ईश्वर का ..... है। (वास/पास)

(घ) हरे पेड़ को नहीं ..... चाहिए। (हटाना/काटना)

6. जीवन में विद्या या पढ़ाई-लिखाई के क्या फ़ायदे हैं? 5-6 वाक्यों में उत्तर लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

7. नीचे लिखे शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

भला – .....

ताज़ा – .....

अधिक – .....

सम्मान – .....

बुद्धिमान – .....

धनवान – .....

सुखी – .....

ईमानदार – .....

आइए, करके देखें

- बाज़ार में मलूकदास, संत रविदास और वृंद की पुस्तकों का पता लगाइए और उन्हें पढ़िए। अच्छे-अच्छे दोहों को याद करिए।
- बाज़ार में दोहों की सीडी और कैसेट भी मिलते हैं। उन्हें लाइए और सुनिए।
- खुशी के मौकों पर आप गानों के साथ दोहों के कैसेट भी बजाइए।

अब यह भी जानिए

वृंद– वृंद का जन्म बीकानेर में सेवक जाति के परिवार में हुआ था। उन्होंने काशी में शिक्षा प्राप्त की। वृंद पहले औरंगज़ेब और उसके पुत्र अज़ीमुल्लाह के कृपा पात्र रहे। बाद में गुसाईं जी के शिष्य हो गए। वृंद के दोहे लोगों की ज़ुबान पर बसे हैं। उनमें जीवन के बहुत अच्छे-अच्छे संदेश हैं।

मलूकदास– संत मलूकदास का जन्म उत्तरप्रदेश के ग्राम कड़ा माणिकपुर में हुआ था। वे हमेशा गरीबों और ज़रूरतमंदों की सेवा में लगे रहते थे। बचपन से ही वे दूसरे बच्चों से अलग थे। वे जिस रास्ते चलते, उसे साफ़ करते हुए चलते। चाहे जितने काँटे पड़े हों, चाहे जितना कूड़ा, बिना साफ़ किए आगे न बढ़ते। मलूकदास जी के दोहे जन-जीवन में रचे-बसे हैं। आज भी ये दोहे लोगों को सही राह दिखा रहे हैं।

रविदास– संत रविदास की गिनती सिद्ध संतों में होती है। उनका जन्म काशी में हुआ था। माघ की पूर्णिमा को हर साल उनकी जयंती मनाई जाती है। बचपन से ही संतों की सेवा और संगत करना उन्हें खूब भाता था। इससे नाराज़ होकर रविदास के पिता ने उन्हें घर से निकाल दिया। बाद में उन्होंने जूते सिलकर अपना गुज़ारा किया। उनके बनाए भजन और दोहे आज भी समाज में सुने-सुनाए जाते हैं।

उत्तरमाला

1. (क) विद्या का धन।

   (ख) कोई भी चीज़ थोड़ी-थोड़ी करके बहुत हो जाती है।

   (ग) पानी नहीं निकलेगा। पूरी मेहनत बेकार जाएगी।

   (घ) क्योंकि पेड़ों में भी जान होती है।

   (च) अपने अच्छे व बुरे कर्मों की वजह से।

2. स्वयं कीजिए।

3. सरसुति = विद्या, सिल = पत्थर, तोय = पानी

   परबत = पहाड़, ओछो = नीच, कीच = कीचड़

   फेर = चक्कर, पृथक = अलग

4. (अ) रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान।।

   (ब) तेई ऊँचे जानिए, जिनके नीचे नैन।।

   (स) हरी डाल न तोड़िये, लागै छूरा बान।।

   (द) रविदास पृथक कैसे भये, हिन्दू-मूसलमान।।

5. (क) अनोखा, (ख) निकलता, (ग) वास, (घ) काटना

6. स्वयं कीजिए।

7. भला = बुरा, ताज़ा = बासी, अधिक = कम

   सम्मान = अपमान, बुद्धिमान = मूर्ख, धनवान = निर्धन

   सुखी = दुखी, ईमानदार = बेईमान

पाठ 9

सौ ग्राम रबड़ी

यह एक लोककथा है जिसमें दूसरों को मूर्ख न समझने और अपने को अधिक बुद्धिमान मानकर घमंड न करने की सीख मिलती है। प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे की भावनाओं की कद्र करनी चाहिए तथा विनम्र बने रहना चाहिए।

इस पाठ से हम सीखेंगे:

- *अपनी बुद्धि पर घमंड करना अच्छी बात नहीं है।*
- *दूसरों को मूर्ख समझना ठीक नहीं होता।*
- *दूसरों को अपमानित करनेवाला कभी न कभी खुद ही अपमानित होता है।*
- *लिंग के प्रकार।*

पाठ

एक हलवाई था। नाम था रामलाल। वह बहुत अच्छी मिठाइयाँ बनाता था। दूर-दूर से लोग उसकी दुकान पर आते थे।

रामलाल में एक खराब आदत थी। वह अपने आपको बहुत बुद्धिमान मानता था। दूसरों को मूर्ख समझता था। उसकी दुकान पर एक बोर्ड लगा था। उस पर लिखा था–"रोज़ खाओ मिठाई, रोज पियो दुद्धू।
एक मैं ही बुद्धिमान, बाकी सब बुद्धू।"

लोग उससे यह बोर्ड हटाने के लिए कहते। कहते– इसकी दूसरी लाइन ठीक नहीं है। इससे सबका अपमान होता है। अकेले तुम ही बुद्धिमान हो, यह कैसे कहते हो? बाकी सब बुद्धू कैसे हो सकते हैं?

रामलाल अपनी मूँछों पर ताव देते हुए कहता–"मैं बुद्धिमान हूँ, तभी तो लिखा है। आज तक मुझे कोई ठग नहीं पाया। बेवकूफ़ नहीं बना पाया। जिस दिन कोई मुझे मूर्ख बना देगा, उसी दिन उतार दूँगा यह बोर्ड।"

लोग रामलाल को मूर्ख बनाने के लिए तरह-तरह की तरकीबें भिड़ाते पर रामलाल हर बार बच निकलता।

एक बार की बात है। एक आदमी रामलाल की दुकान पर आया। खूब महँगे कपड़े। ऊँची-सी पगड़ी। देखने में ही रईस लगता था। उसने लड्डू का भाव पूछा। फिर दो किलो लड्डू तुलवाए। इसके बाद बरफ़ी का भाव पूछा। दो किलो बरफ़ी तुलवाई। फिर गुलाब जामुन, कलाकंद सभी मिठाइयाँ दो-दो किलो तुलवाईं।

मिठाइयाँ तौलते-तौलते रामलाल बहुत खुश हो रहा था। सोच रहा था– 'आज तो भगवान ने कोई रईस ग्राहक भेज दिया है। महीनेभर की कमाई आज ही हो जाएगी।'

दुकान पर कड़ाह में दूध खौल रहा था। जब सब मिठाइयाँ तुल गईं, तो ग्राहक रामलाल से बोला–"अब ये सारी मिठाइयाँ इस दूध में डाल दो।"

रामलाल एक पल को झिझका। फिर सोचा– 'मुझे क्या करना है। पैसे तो वही देगा, मिठाई चाहे दूध में डालने को कहे, चाहे पानी में।' उसने एक-एक करके सारी मिठाइयाँ दूध में डाल दीं। फिर पूछा–"अब क्या करना है?"

ग्राहक बोला–"करना क्या है? इसे अच्छी तरह घोटो।"

रामलाल दूध में मिठाइयाँ घोटने लगा। थोड़ी देर बाद बोला–"यह तो बिलकुल रबड़ी बन गई।"

ग्राहक ने कहा–"बहुत अच्छा! रबड़ी क्या भाव है?"

"दो सौ रुपये किलो।" रामलाल ने कहा।

ग्राहक ने जेब से बीस रुपये का नोट निकाला। रामलाल को दिया। बोला–"इसमें से सौ ग्राम रबड़ी मुझे दे दो।"

रामलाल को गुस्सा आ गया। झल्लाकर बोला–"ऐसा कैसे हो सकता है! तुमको सारी मिठाइयों के पैसे देने पड़ेंगे, और दूध के भी!"

ग्राहक ने कहा–"पर मैंने न तो मिठाइयाँ लीं, न दूध। बस, सौ ग्राम रबड़ी माँग रहा हूँ। उसके पैसे भी दे रहा हूँ।''

रामलाल गुस्से से बोला-"पर तुम....''

तभी इधर-उधर से कई लोग हँसते हुए वहाँ आ गए। बोले–''क्यों सेठ जी! अब तो बोर्ड उतारोगे न?"

रामलाल को सारी बात समझ में आ गई। बुद्धू तो वह बन ही चुका था। अब क्या करता! बुझे मन से मेज़ पर चढ़ा और बोर्ड उतार दिया।

इनका मतलब जानिए

शब्द		अर्थ
बुद्धिमान	=	होशियार
दुद्धू	=	दूध
ताव देना	=	ऐंठना/अकड़ दिखाना
मूर्ख	=	बुद्धू
ग्राहक	=	खरीददार

आइए, यह भी जानें

लिंग

संज्ञा शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्री जाति के होने का पता चलता है, उसे 'लिंग' कहते हैं।

इस पाठ में, 'लड्डू तुलवाए', 'बरफ़ी तुलवाई', 'बोर्ड लगा था', 'आदत थी' जैसे शब्द आए हैं।

इनको ध्यान से पढ़िए। 'लड्डू' के साथ 'तुलवाए' शब्द आया है। 'बरफ़ी' के साथ 'तुलवाई' आया है।

'लड्डू' पुल्लिग शब्द है इसलिए उसके साथ 'तुलवाए' आया है। 'बरफ़ी' स्त्रीलिंग है इसलिए उसके साथ 'तुलवाई' आया है।

इसी तरह, 'बोर्ड' पुल्लिग शब्द है और 'आदत' स्त्रीलिंग। 'बोर्ड' के साथ 'था' आया है। 'आदत' के साथ 'थी' आया है।

पुल्लिग शब्दों के साथ था, होगा, रहेगा जैसे क्रिया-शब्द आते हैं। जैसे– रमेश खाना खा रहा था।

कल मौसम साफ़ रहेगा।

स्त्रीलिंग शब्दों के साथ थी, रहेगी, होगी जैसे क्रिया-शब्द आते हैं। जैसे– रेशमा गाना गा रही थी।

कल स्कूल में छुट्टी रहेगी।

जिन शब्दों से पुरुष जाति होने का पता चलता है, वे 'पुल्लिग' शब्द होते हैं। जिन शब्दों से स्त्री जाति के होने का पता चलता है, वे 'स्त्रीलिंग' शब्द होते हैं।

कुछ पुल्लिग शब्द हैं– लड़का, ट्रक, आदमी, पंखा, देश आदि।

कुछ स्त्रीलिंग शब्द हैं– लड़की, औरत, किताब, कॉपी, कार, दीवार आदि।

अभ्यास

1. पाठ के आधार पर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

- हलवाई का नाम क्या था?

  .....

- रामलाल की दुकान के बोर्ड पर क्या लिखा था?

  .....

  .....

- रामलाल किसे बुद्धिमान मानता था?

  .....

- ग्राहक ने क्या लेने के लिए रामलाल को बीस रुपये दिए?

  .....

2. पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

एक वकील ने अपने मुवक्किल को समझाया–"अदालत में तुमसे कई सवाल पूछे जाएँगे। तुम कुछ मत कहना। हर सवाल के जवाब में सिर्फ़ 'वाह' कह

देना।" मुवक्किल ने वैसा ही किया। जज ने उसे पागल समझा और बरी कर दिया। बाद में वकील ने फ़ीस माँगी। मुवक्किल ने कहा–"वाह! वाह!" और वहाँ से चला गया।

- वकील ने मुवक्किल को हर सवाल के जवाब में क्या कहने के लिए कहा?

  .....

- जज ने क्या किया?

  .....

- फ़ीस माँगने पर मुवक्किल ने क्या कहा?

  .....

3. नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

- बुद्धिमान .....
- पगड़ी .....
- रईस .....
- आदत .....

4. नीचे लिखे शब्दों में से स्त्रीलिंग और पुल्लिंग शब्द छाँटकर लिखिए–

दुकान पानी खाना रेलगाड़ी दूध चीनी गेहूँ भैंस खेत गाय

स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

5. सही शब्द भरकर वाक्य पूरे कीजिए–

- कल बाजार बन्द ..... (रहेगा/रहेगी)
- ..... नाम रामलाल है। (उसका/उसकी)
- रेखा ..... लड़की है। (अच्छा/अच्छी)
- मैंने खाना खा .....। (ली/लिया)
- हिमालय ..... पहाड़ है। (ऊँची/ऊँचा)

6. कोई मज़ेदार किस्सा या चुटकुला 6-7 वाक्यों में लिखिए–

.....

.....

.....

.....

.....

.....

करके देखिए

- कुछ मज़ेदार किस्से-कहानियाँ लिखिए, जो आपने लोगों से सुनी हों।
- कुछ मज़ेदार घटनाएँ लिखिए, जो आपके साथ घटी हों या आपने देखी हों।
- इन किस्से-कहानियों, घटनाओं को अपने साथियों को सुनाइए।

उत्तरमाला

1.
   - रामलाल
   - रोज़ खाओ मिठाई, रोज पियो दुद्धू।
     एक मैं ही बुद्धिमान, बाकी सब बुद्धू।

- अपने आपको।
- सौ ग्राम रबड़ी लेने के लिए।

2. स्वयं कीजिए।

3. स्वयं कीजिए।

4.
- स्त्रीलिंग– दुकान, रेलगाड़ी, चीनी, भैंस, गाय।
- पुल्लिंग– पानी, खाना, दूध, गेहूँ, खेत

5.
- रहेगा
- उसका
- अच्छी
- लिया
- ऊँचा

पाठ 10

जब मैं पढ़ता था

गाँधी जी का नाम आपने ज़रूर सुना होगा। उनकी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' में जीवन के अनेक आदर्श वर्णित हैं। यह पाठ गाँधी जी की उसी आत्मकथा से लिया गया है। इसमें उन्होंने लिखा है कि 'श्रवण पितृभक्ति' पुस्तक तथा 'सत्यवादी हरिश्चन्द्र' नाटक आदि पुस्तकें पढ़ने से उनका जीवन बहुत प्रभावित हुआ। उन्होंने लिखा है कि हस्तकला तथा व्यायाम विद्यार्थियों के लिए बहुत ज़रूरी है।

इस पाठ से हम सीखेंगे

- *बड़ों की सेवा और सम्मान करना।*
- *सादगी, सत्यप्रियता और अनुशासन जैसे सद्गुणों का महत्त्व जानना तथा उनका पालन करना।*
- *सुलेख के प्रति सावधानी बरतना।*
- *पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद में भी रुचि लेना।*
- *वाक्य संरचना के सरल नियमों को समझना।*

पाठ

मेरे पिता करमचन्द गाँधी राजकोट के दीवान थे। वे सत्यप्रिय, साहसी और उदार व्यक्ति थे। मेरी माताजी का स्वभाव बहुत अच्छा था। वे धार्मिक विचारों की महिला थीं। पूजा-पाठ के बिना भोजन नहीं करती थीं।

2 अक्टूबर, सन् 1869 को पोरबंदर में मेरा जन्म हुआ। पोरबंदर से पिताजी जब राजकोट गए, तब मेरी उम्र सात

वर्ष की रही होगी। मैं पाठशाला से अपर स्कूल में और वहाँ से हाईस्कूल में गया। एक बार पिताजी 'श्रवण पितृभक्ति' नामक पुस्तक खरीद कर लाए। मैंने उसे बड़े शौक से पढ़ा। उन दिनों बाइस्कोप में तसवीर दिखाने वाले लोग आया करते थे। तभी मैंने अंधे माता-पिता को बहँगी पर बैठाकर ले जानेवाले श्रवण कुमार का चित्र देखा। इन बातों का मेरे मन पर बहुत प्रभाव पड़ा। मन ही मन मैंने तय किया कि मैं भी श्रवण की तरह बनूँगा।

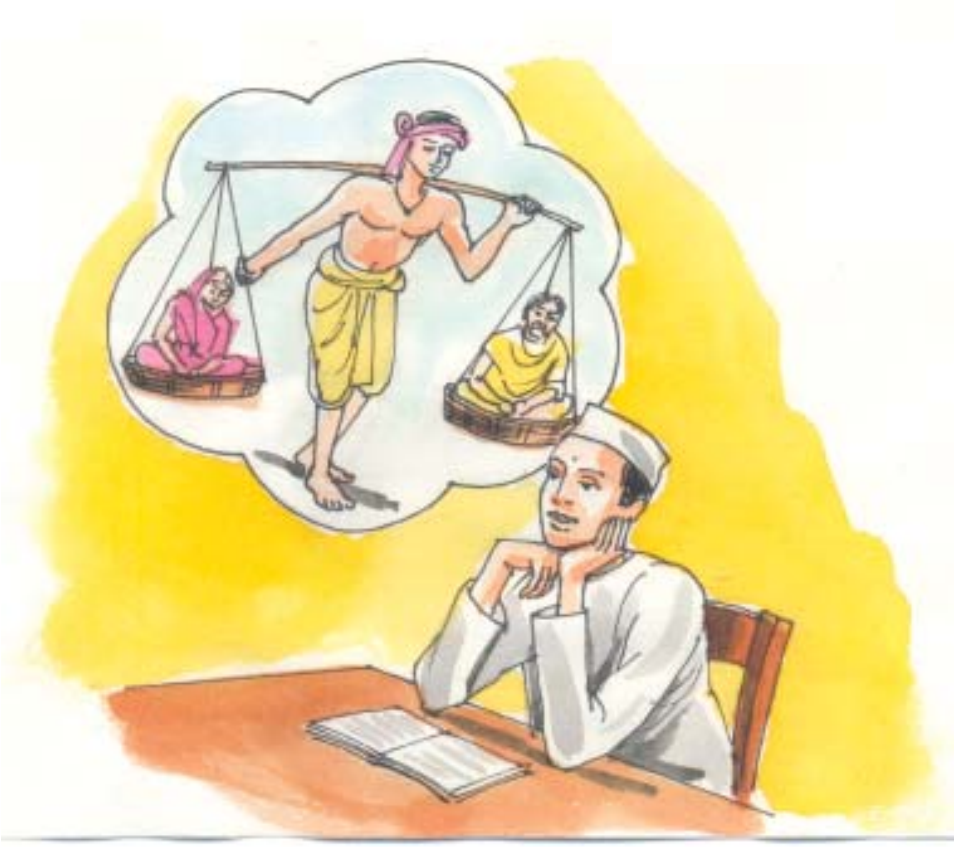

मैंने 'सत्यवादी हरिश्चन्द्र' नाटक भी देखा था। मेरे मन में यह बात बैठ गई कि चाहे हरिश्चन्द्र की भाँति कष्ट उठाना पड़े पर सत्य को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

मैंने पुस्तकों में पढ़ा था कि खुली हवा में घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। यह बात मुझे अच्छी लगी। तभी से मैंने सैर करने की आदत डाल ली। इससे मेरा शरीर मज़बूत हो गया।

लिखने में अक्षर अच्छे होने की ज़रूरत नहीं। यह गलत विचार मेरे मन में इंग्लैंड जाने तक रहा। आगे चलकर दूसरों के मोती जैसे अक्षर देखकर मैं बहुत पछताया। मैंने देखा कि लेख बुरा होना अपूर्ण शिक्षा की निशानी है। बाद में मैंने अपने अक्षर सुधारने का प्रयत्न किया परन्तु पके घड़े पर कहीं मिट्टी चढ़ सकती है?

सुलेख शिक्षा का एक ज़रूरी अंग है। उसके लिए चित्रकला सीखनी चाहिए। बालक जब चित्र बनाना जान जाता है, तब यदि अक्षर लिखना सीखे तो उसके अक्षर मोती जैसे हो जाते हैं।

अपने आचरण की तरफ़ मैं बहुत ध्यान देता था। इसमें यदि कोई भूल हो जाती तो मेरी आँखों में आँसू भर आते थे। मेरे हाथों कोई ऐसा काम हो, जिसके लिए शिक्षक मुझे दण्ड दें, यह मेरे लिए असह्य था।

बात सातवीं कक्षा की है। उस समय हेडमास्टर कड़ा अनुशासन रखते थे। फिर भी वे विद्यार्थियों के लिए प्रिय थे। वे स्वयं ठीक काम करते, दूसरों से भी ठीक काम लेते थे। पढ़ाते अच्छा थे। उन्होंने ऊपर की कक्षा के लिए व्यायाम और क्रिकेट अनिवार्य कर दिए थे। मेरा मन इन चीज़ों में नहीं लगता था। अनिवार्य होने से पहले मैं कभी व्यायाम करने, क्रिकेट या फ़ुटबॉल खेलने गया ही नहीं था। वहाँ न जाने में मेरा संकोची स्वभाव भी कारण था। अब मैं यह देखता हूँ कि व्यायाम के प्रति अरुचि मेरी गलती थी। उस समय मेरे मन में गलत विचार घर किए हुए थे कि व्यायाम का शिक्षण के साथ कोई संबंध नहीं है। बाद में समझा कि पढ़ने के साथ-साथ व्यायाम करना भी बहुत ज़रूरी है।

–मोहनदास करमचन्द गाँधी

इनका मतलब जानिए

शब्द		अर्थ
सत्यप्रिय	=	सच्चाई से लगाव रखने वाला
उदार	=	बड़े दिल वाला
पितृभक्ति	=	पिता के प्रति सेवा-भाव
बाइस्कोप	=	तसवीर दिखाने की मशीन
अपूर्ण	=	अधूरा
प्रयत्न	=	कोशिश

पके घड़े पर मिट्टी न चढ़ना = कोई आदत जल्दी नहीं सुधरना

सुलेख = अच्छी लिखावट

आचरण = व्यवहार

असह्य = सहन न करने योग्य

अनिवार्य = बहुत जरूरी, जिसे टाला न जा सके

अरुचि = अच्छा न लगना

आइए, यह भी जानें

वाक्य संरचना

वाक्य को ध्यान से पढ़िए–

मैंने 'सत्यवादी हरिश्चन्द्र' नाटक भी देखा था।

नाटक किसने देखा– मैंने।

मैंने क्या देखा– नाटक।

मैंने कौन-सा काम किया– देखने का काम।

इस वाक्य में देखने का काम 'मैंने' किया। अत: 'मैं' काम करने वाला हुआ। काम के करने वाले को 'कर्त्ता' कहते हैं।

'हरिश्चन्द्र नाटक' को देखने का काम किया गया है, इसलिए 'हरिश्चन्द्र नाटक' 'कर्म' है।

इस वाक्य में 'देखने' का काम किया गया है। इसलिए 'देखना' 'क्रिया' है।

इस पाठ में अनेक 'वाक्य' आए हैं।

वाक्य का मतलब है, अर्थ देने वाले शब्दों का समूह। उदाहरण के लिए, इस पाठ में आए इस वाक्य को ध्यान से पढ़िए–

उस समय हेडमास्टर कड़ा अनुशासन रखते थे।

इस प्रकार स्पष्ट है कि वाक्य बनाने में सबसे पहले 'कर्त्ता', फिर 'कर्म' और अंत में 'क्रिया' आती है।

कुछ और उदाहरण देखिए–

– 'हरिश्चन्द्र ने कष्ट उठाए।' इस वाक्य में 'हरिश्चन्द्र' कर्त्ता है, 'कष्ट' कर्म है तथा 'उठाए' क्रिया है।
– 'हरिश्चन्द्र ने सत्य नहीं छोड़ा।' इस वाक्य में 'हरिश्चन्द्र' कर्त्ता है, 'सत्य' कर्म है तथा 'नहीं छोड़ा' क्रिया है।
– 'मैंने पुस्तक पढ़ी।' इस वाक्य में 'मैंने' कर्त्ता है, 'पुस्तक' कर्म है तथा 'पढ़ना' क्रिया है।
– 'हेडमास्टर कड़ा अनुशासन रखते थे।' इस वाक्य में 'हेड मास्टर' कर्त्ता है, 'कड़ा अनुशासन' कर्म है तथा 'रखना' क्रिया है।
– 'मैं दण्ड का पात्र समझा गया।' इस वाक्य में 'मैं' कर्त्ता है, 'दण्ड' कर्म है तथा 'समझा गया' क्रिया है।

आइए, अब वाक्य के भेद समझिए

वाक्यों को 'रचना' और 'अर्थ' के आधार पर दो भागों में बाँटा गया है।

1. **रचना के आधार पर:** रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं– साधारण वाक्य, मिश्रित वाक्य और संयुक्त वाक्य। आइए, इनके विषय में जानें–

   क. साधारण वाक्य: साधारण वाक्य, अर्थ देने वाला एक वाक्य होता है। जैसे:

   – मेरे पिता करमचन्द गाँधी राजकोट के दीवान थे।
   – मेरा जन्म पोरबंदर में हुआ।

ख. मिश्रित वाक्य: दो या दो से अधिक साधारण वाक्यों से बना वाक्य मिश्रित वाक्य कहलाता है। मिश्रित वाक्य में एक मुख्य वाक्य होता है, बाकी आश्रित वाक्य कहलाते हैं।

जैसे–

– मैंने पुस्तकों में पढ़ा था कि खुली हवा में घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है।

इस वाक्य में 'मैंने पुस्तकों में पढ़ा था' मुख्य वाक्य है। कि खुली हवा में घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। यह आश्रित वाक्य है।

– मैंने देखा कि अक्षर बुरे नहीं होने चाहिए क्योंकि बुरे अक्षर अपूर्ण शिक्षा की निशानी हैं।

इस वाक्य में 'मैंने देखा' मुख्य वाक्य है। 'कि अक्षर बुरे नहीं होने चाहिए' तथा 'क्योंकि बुरे अक्षर अपूर्ण शिक्षा की निशानी हैं।' ये दोनों आश्रित वाक्य हैं।

ग. संयुक्त वाक्य: संयुक्त वाक्य में दो साधारण वाक्य होते हैं। इनमें एक मुख्य वाक्य होता है, लेकिन दूसरा वाक्य उसका आश्रित वाक्य नहीं होता।

जैसे– मैंने सैर करने की आदत डाल ली और इससे मेरा शरीर मजबूत हो गया।

इस वाक्य में 'मैंने सैर करने की आदत डाल ली' मुख्य वाक्य है और दूसरा वाक्य 'और इससे मेरा शरीर मजबूत हो गया' आश्रित वाक्य न होकर समान अधिकार वाला वाक्य है।

2. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद: अर्थ के आधार पर वाक्य के कई भेद होते हैं। मुख्य रूप से नीचे लिखे भेदों को जानना आवश्यक है–

क. साधारण वाक्य: जो वाक्य एक साधारण अर्थ देता है, उसे साधारण वाक्य कहते हैं। जैसे– सुलेख शिक्षा का एक जरूरी अंग है।

इस वाक्य में एक साधारण बात कही गई है इसलिए यह एक साधारण वाक्य है।

ख. प्रश्नवाचक वाक्य: प्रश्न पूछे जाने का बोध कराने वाला वाक्य प्रश्नवाचक वाक्य कहलाता है। जैसे– पके घड़े पर कहीं मिट्टी चढ़ सकती है?

ग. नकारात्मक वाक्य: 'नहीं' या 'मत' का बोध कराने वाला वाक्य नकारात्मक वाक्य होता है। जैसे–

– मेरा मन इन चीज़ों में नहीं लगता था।

– आग से मत खेलो।

घ. विस्मयबोधक अथवा आश्चर्यबोधक वाक्य: ऐसे वाक्य, जो 'विस्मय' या 'आश्चर्य' का बोध कराते हैं, उन्हें विस्मयबोधक वाक्य कहते हैं। जैसे–

- अरे! यह कितना सुन्दर चित्र है!

अभ्यास

1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

क. महात्मा गाँधी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

.....

ख. गाँधी जी को कौन-सा नाटक पढ़ने से सच बोलने की प्रेरणा मिली?

.....

ग. मोती जैसे अक्षर बनाने के लिए क्या सीखना चाहिए?

.....

घ. इस पाठ में गाँधी जी के किन गुणों पर प्रकाश डाला गया है?

.....

2. पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

एक महिला ने अपने घर के बाहर तीन संतों को देखा। उसने तीनों को अपने घर के अन्दर बुलवाया।

संत बोले– हम सब किसी भी घर में एक साथ नहीं जाते।

महिला ने पूछा– पर क्यों?

एक बोला– मेरा नाम 'धन' है और ये दोनों 'सफलता' और 'प्रेम' हैं। किसे घर में बुलाना चाहती हो?

महिला के पति ने पहले धन को बुलाने की बात कही। पत्नी सफलता को बुलाना चाहती थी क्योंकि सफलता के साथ धन तो जुड़ा ही होता है। किन्तु उनकी बेटी ने सुझाव दिया कि प्रेम को पहले बुलाइए। प्रेम से बढ़कर कुछ भी नहीं है।

माता-पिता ने बेटी की बात मान ली। प्रेम को अन्दर बुलाया। सभी को अचम्भा हुआ कि प्रेम के पीछे धन और सफलता भी अन्दर चले आए। जहाँ प्रेम होता है, वहाँ धन और सफलता उसके साथ ही होते हैं।

क. महिला ने अपने घर के बाहर क्या देखा?

.....

ख. महिला के पति ने किस को अन्दर बुलाने को कहा?

.....

ग. पुत्री ने प्रेम को अन्दर बुलाने को क्यों कहा?

.....

3. नीचे लिखे शब्दों में से सही शब्द चुनकर खाली स्थानों में भरिए–

अनिवार्य, पितृभक्त, अपूर्ण, उदार, व्यायाम

क. अक्षर बुरे होना ..... शिक्षा की निशानी है।

ख. श्रवण कुमार ..... था।

ग. हेडमास्टर साहब ने व्यायाम और क्रिकेट ..... कर दिए थे।

घ. अच्छी सेहत के लिए ..... करना ज़रूरी है।

च. गाँधी जी की माता जी ..... विचारों की महिला थीं।

4. नीचे लिखे वाक्यों में सही (√) या गलत (×) का चिह्न लगाइए–

क. मेरे पिता करमचन्द गाँधी सौराष्ट्र के दीवान थे। ( )

ख. गाँधी जी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 में हुआ था। ( )

ग. सुलेख शिक्षा का ज़रूरी अंग नहीं है। ( )

घ. मेरे मन में गलत विचार घर किए हुए थे। ( )

5. नीचे लिखे शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

आचरण = ...

.....

अनुशासन = ...

.....

शिक्षक = ...

.....

बाइस्कोप = ...

.....

6. दोनों तरफ़ के वाक्यों को सही रूप से मिलाकर बात पूरी कीजिए–

क. सुलेख शिक्षा का ज़रूरी अंग है	1. इससे मेरा शरीर मज़बूत हो गया।
ख. मैंने सैर करने की आदत डाल ली	2. कि व्यायाम का शिक्षण से कोई संबंध नहीं है।
ग. यह मेरे मन का गलत विचार था	3. इससे मुझे सत्य बोलने की प्रेरणा मिली।
घ. मैंने हरिश्चन्द्र नाटक देखा था	4. उसके लिए चित्रकला सीखनी चाहिए।

7. (क) वाक्य किसे कहते हैं? .....

.....

(ख) रचना के आधार पर वाक्य के भेद लिखिए– .....

.....

8. नीचे लिखे वाक्यों को नकारात्मक वाक्यों में बदलिए–

क. युवराज फ़ुटबाल का अच्छा खिलाड़ी है।

.....

.....

ख. पके घड़े पर मिट्टी चढ़ सकती है।

.....

.....

ग. लेख सुधारने की कोशिश करो।

.....

.....

उत्तरमाला

1. क. 2 अक्टूबर, सन् 1869 को पोरबंदर में
   ख. सत्यवादी हरिश्चन्द्र
   ग. चित्रकला
   घ. सच बोलना
2. स्वयं कीजिए।
3. क. अपूर्ण ख. पितृभक्त
   ग. अनिवार्य घ. व्यायाम
   च. उदार
4. क. × ख. √
   ग. × घ. √
5. स्वयं कीजिए।
6. क. 4 ख. 1
   ग. 2 घ. 3
7. क. वाक्य का मतलब है, अर्थ देने वाले शब्दों का समूह।
   ख. साधारण वाक्य, मिश्रित वाक्य, संयुक्त वाक्य।
8. क. युवराज फ़ुटबाल का अच्छा खिलाड़ी नहीं है।
   ख. पके घड़े पर मिट्टी नहीं चढ़ सकती है।
   ग. लेख सुधारने की कोशिश मत करो।

जाँच पत्र-3

(पाठ 7 से 10 तक)

समय - 2 घंटा
कुल अंक - 40

1. सही उत्तर पर सही (√) का निशान लगाइए–

क. उम्मीदवार किसे कहते हैं?

अ. जिसकी कोई उम्मीद न हो। ब. जिससे कोई उम्मीद न हो।

स. जो चुनाव में खड़ा हो। द. इनमें से कोई नहीं।

ख. पोरबन्दर क्या है?

अ. पूरा बन्दर ब. बड़ा बन्दर

स. बन्दरों के रहने का स्थान द. गाँधी जी का जन्म स्थान

2. सही वाक्य पर सही (√) तथा गलत वाक्य पर गलत (×) का निशान लगाइए–

अ. हमें अपनी ताकत, पैसे और ओहदे पर घमंड नहीं करना चाहिए। ( )

ब. चुनाव में केवल अमीर लोगों को वोट देने का अधिकार है। ( )

3. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए–

अ. दाल अभी पूरी तरह ..... नहीं है। (पका/पकी)

ब. गंगा हमारे गाँव के पास ..... है। (बहती/बहता)

4. शब्दों के सही अर्थ पर सही (√) का निशान लगाइए–

जड़मति = (क) बिना जड़वाला (ख) अज्ञानी (ग) अधिक जाड़ा
(घ) एक प्रकार का कीड़ा

आचरण = (क) अचार वाला (ख) व्यवहार (ग) आग की आँच
(घ) बड़े चरण वाला

5. सही विलोम शब्द पर सही (√) का निशान लगाइए–

ताज़ा – बासी मोटा

गरीब – ताकतवर अमीर

6. वोट देने का अधिकार किस उम्र के बाद मिलता है?

.....

7. ऐसा कौन-सा धन है, जो खर्च करने से बढ़ता है?

.....

8. कोई व्यक्ति ऊँचा या नीचा किस कारण होता है?

.....

9. गाँधी जी को सत्य का साथ न छोड़ने की प्रेरणा कैसे मिली?

.....

10. किसी शब्द का उल्टा अर्थ देने वाला शब्द क्या कहलाता है?

.....

11. हमें कैसे उम्मीदवार को वोट देना चाहिए?

.....

12. 'कन कन जोरे मन जुरै' का मतलब क्या है?

.....

13. व्यायाम करने के क्या-क्या फ़ायदे हैं?

.....

14. वोटर कार्ड बनवाने के लिए कौन-सी चीज़ें जमा करनी होती हैं?

.....

15. एक अच्छे इंसान में क्या-क्या गुण होने चाहिए? 6-7 पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

पाठ 11

प्रेरक-प्रसंग

हमारे देश के महापुरुषों ने हमें एक मज़बूत विरासत दी है। इस पाठ में लालबहादुर शास्त्रीजी के जीवन की तीन घटनाएँ दी गई हैं। इनसे हमें सीख मिलती है कि सच्चाई, ईमानदारी, सेवाभाव, कर्त्तव्यनिष्ठा, देशप्रेम जैसी विशेषताओं के कारण ही लालबहादुर शास्त्री एक महान व्यक्तित्व बने। आइए, शास्त्रीजी के जीवन के प्रेरक प्रसंगों को पढ़ें।

इस पाठ से हम सीखेंगे

- *एक सामान्य व्यक्ति भी हमारे जीवन का पथप्रदर्शक बन सकता है।*
- *जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प, ईमानदारी, कर्त्तव्य-पालन और सूझ-बूझ होना बहुत ज़रूरी है।*
- *हमें सदा जीवन मूल्यों और नैतिक मूल्यों की रक्षा करनी चाहिए।*
- *कर्त्तव्य-पालन में ईमानदारी बहुत काम आती है।*
- *अभावग्रस्त जनता की चिंता करना हर अधिकारी का कर्त्तव्य है।*
- *उपसर्ग का ज्ञान और प्रयोग।*

पाठ

पाँच-छह साल का एक बच्चा अपने साथियों के साथ आम के बगीचे में चला गया। सभी बच्चे आम तोड़ने लगे। नन्हा बालक चुपचाप एक कोने में खड़ा रहा। साथियों के उकसाने पर भी उसने आम नहीं तोड़े लेकिन गुलाब का एक सुंदर फूल उसे बेहद पसंद आया। उसने फूल तोड़ लिया। बगीचे में माली आ धमका। सभी

बच्चे डर के मारे भाग गए लेकिन नन्हा बच्चा वहीं निडर खड़ा रहा। माली ने कहा– ''कहाँ है तेरा घर? चल, मैं तेरे बाबू जी से तेरी करतूत बताता हूँ।''

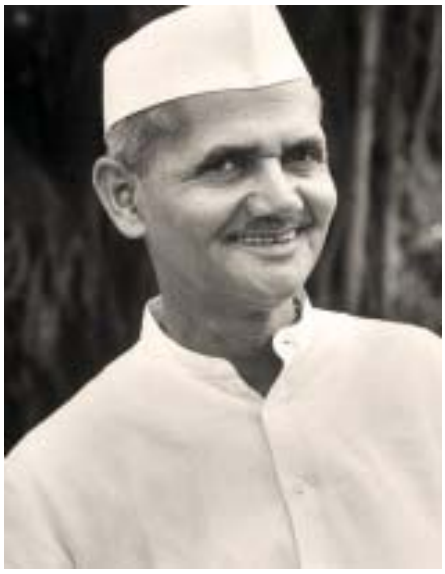

नन्हे ने कहा–''मेरे पिताजी नहीं हैं। बालक का भोला चेहरा व सरल आँखें देखकर माली रुक गया। उसने समझाया, तब तो तुम्हें ऐसे काम बिलकुल नहीं करने चाहिए, क्योंकि तुम्हें पिटाई से बचाने वाला भी कोई नहीं है।'' नन्हे को लगा, जैसे माली के रूप में उसके जीवन को दिशा बताने वाला कोई खड़ा हो। उसने उसी क्षण अच्छा बच्चा बनने का संकल्प किया। यह नन्हा कोई और नहीं, लाल बहादुर शास्त्री था। जो आगे चलकर अपनी सच्चाई, ईमानदारी, सेवाभाव और कर्त्तव्य-निष्ठा के बल पर देश का प्रधानमंत्री बना।

लाल बहादुर शास्त्री एक दिन कार में बैठकर कहीं जा रहे थे। जैसे ही वे रेल के फ़ाटक पर पहुँचे, फ़ाटक बंद हो गया। गाड़ी आने में अभी देर थी। शास्त्रीजी का ड्राइवर गेट मैन के पास गया और फ़ाटक खोलने की ज़िद करने लगा। वह नहीं माना। तब ड्राइवर ने धमकी भरे स्वर में कहा–"तुम जानते हो, इस कार में कौन बैठा है? ये भारत के रेल मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री हैं। फ़ाटक खोल दो अन्यथा तुम्हारी नौकरी चली जाएगी।"

''ड्राइवर साहब! कार में कोई मंत्री हो या प्रधानमंत्री, नौकरी रहे या जाए, जब तक रेल गुजर नहीं जाएगी, फाटक नहीं खुलेगा।"

रेल निकल गई। फ़ाटक खुला। तब शास्त्रीजी ने इशारे से गेट मैन को अपने पास बुलाया। उसकी पीठ थपथपाई और उसे एक सौ रुपए पुरस्कार में दिए।

कर्त्तव्य–पालन करने वाले व्यक्ति की सराहना करने वाले लोग इस दुनिया में विरले ही होते हैं।

लाल बहादुर शास्त्री जब देश के प्रधानमंत्री थे, तब केरल में सूखा पड़ा। लोग चावल के दाने–दाने को तरसने लगे थे। केरल के निवासियों का मुख्य भोजन चावल ही है। शास्त्रीजी यह जानकर अत्यंत परेशान थे। उन्होंने केरल राज्य की जनता को आश्वासन दिया–आपके लिए चावल का उचित प्रबंध किया जाएगा। मेरा संकल्प है कि हर केरलवासी को चावल मिलेगा। बिना चावल के एक भी भाई भूखा नहीं रहेगा। शास्त्रीजी ने अधिकारियों को चावल की कमी पूरा करने का आदेश दिया। देश के अन्य क्षेत्रों से चावल खरीदकर केरल भेजा गया। शास्त्री जी ने रोटी खा सकने वाले लोगों से अनुरोध किया कि वे चावल का प्रयोग कम करें। जो स्वाद के लिए चावल खाते हैं, वे अनिवार्य होने पर ही चावल खाएँ। उन्होंने अपने घर में भी सख्त निर्देश दिए कि जब तक केरल में चावल की कमी पूरी नहीं हो जाती, तब तक घर में चावल नहीं पकाए जाएँगे। यह आदेश सुनकर प्रधानमंत्री जी के बच्चे परेशान हुए क्योंकि वे चावल खाने के शौकीन थे। प्रधानमंत्री निवास पर तब तक चावल नहीं पकाए गए, जब तक केरल की स्थिति पर काबू नहीं पा लिया गया।

इनका मतलब जानिए

शब्द		अर्थ
नन्हा	=	छोटा
उकसाना	=	बढ़ावा देना
करतूत	=	गंदा काम
दिशा	=	मार्ग
संकल्प	=	व्रत, दृढ़ निश्चय
कर्त्तव्य-निष्ठा	=	काम करने में लगन, आस्था
गेट मैन	=	रेल का फ़ाटक बंद करने और खोलने वाला
अन्यथा	=	नहीं तो, वरना
पीठ थपथपाना	=	शाबाशी देना
पुरस्कार	=	इनाम

शब्द		अर्थ
सराहना	=	तारीफ़ करना
सूखा	=	वर्षा न होना
दाने-दाने को तरसना	=	कुछ भी न मिलना
आश्वासन	=	भरोसा
प्रबंध	=	इन्तज़ाम
क्षेत्र	=	भाग, इलाका
अनुरोध	=	विनती, आग्रह
अनिवार्य	=	जरूरी
स्थिति	=	हालत

आइए, यह भी जानें:

उपसर्ग

नीचे लिखे रेखांकित शब्दों को ध्यान से पढ़िए–

लेकिन उसे गुलाब का फूल <u>बेहद</u> पसंद आया।

नन्हा बच्चा वहीं <u>निडर</u> खड़ा रहा।

आपके लिए चावल का उचित <u>प्रबंध</u> किया जाएगा।

अब इन वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए।

हद, डर, बंध मूल शब्दों में बे, नि, प्र शब्दांश जोड़कर शब्द बने–बेहद, निडर, प्रबंध।

शब्द के शुरू में जुड़ने वाले ये शब्दांश 'उपसर्ग' कहलाते हैं।

ये शब्दांश मूल अथवा मुख्य शब्द से पहले जुड़कर शब्द के रूप और अर्थ में बदलाव ला देते हैं और एक नया शब्द बना देते हैं।

अत: जो शब्दांश किसी मूल शब्द के पहले जुड़कर एक नया शब्द बना देते हैं, उन्हें 'उपसर्ग' कहते हैं।

अब उपसर्गों के कुछ और उदाहरण देखिए–

उपसर्ग	शब्द	नया शब्द
अ	तिथि	अतिथि
अ	समान	असमान
अप	मान	अपमान
उप	हास	उपहास
अनु	वाद	अनुवाद
आ	मरण	आमरण
सु	प्रभात	सुप्रभात

अभ्यास

1. (क) बचपन में लाल बहादुर शास्त्री को किसने जीवन की सही दिशा दिखाई?

.....

(ख) नन्हे ने क्या संकल्प किया?

.....

(ग) अपनी सच्चाई और कर्त्तव्य-निष्ठा के बल पर भविष्य में यह बालक क्या बना?

.....

(घ) लाल बहादुर शास्त्री जैसे ही रेल के फ़ाटक के पास पहुँचे, तब क्या हुआ?

.....

(ङ) लाल बहादुर शास्त्री ने गेट मैन को पुरस्कार क्यों दिया?

.....

(च) केरलवासियों को लाल बहादुर शास्त्री ने क्या आश्वासन दिया?

.....

2. नीचे लिखे शब्दों को उनके अर्थों से जोड़िए–

शब्द	अर्थ
(क) उकसाना	1. बेकसूर
(ख) करतूत	2. काम को निभाना
(ग) सूझ-बूझ	3. वरना
(घ) अन्यथा	4. ज़रूरी
(ङ) कर्त्तव्य-पालन	5. समझदारी
(च) निर्दोष	6. भड़काना
(छ) अनिवार्य	7. बुरा काम

3. नीचे लिखे उपसर्गों की सहायता से कुछ नए शब्द बनाइए–

उपसर्ग	शब्द	नया शब्द
अप	मान	अपमान
कु	.....	.....
वि	.....	.....
सु	.....	.....

4. नीचे लिखे वाक्यों को पढ़कर सही (√) अथवा (×) का निशान लगाइए–

(क) लाल बहादुर शास्त्री बचपन में बहुत शरारती थे। ☐

(ख) बचपन में ही नन्हे के पिता का देहान्त हो गया था। ☐

(ग) रेल मंत्री के ड्राइवर के कहने से गेट मैन ने फ़ाटक खोल दिया। ☐

(घ) लोग चावल के दाने-दाने को तरसने लगे। ☐

(ङ) प्रधानमंत्री निवास पर हमेशा चावल बनते रहे। ☐

5. नीचे लिखे शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

शब्द	वाक्य
करतूत	.....
संकल्प	.....
अन्यथा	.....
अत्यंत	.....
अनिवार्य	.....

6. नीचे लिखे शब्दों में से 'उपसर्ग' वाले शब्द छाँटकर लिखिए–

प्रारम्भिक, नगर, दुर्दिन, सुयोग्य, पाठशाला, प्रपंच, स्थिति, स्वागत

.....

.....

.....

7. नीचे लिखे गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

एक जंगल में दो बैल रहते थे। बड़े स्वस्थ और मोटे-ताज़े थे वे दोनों। एक शेर की निगाह उन पर पड़ी। शेर ने दौड़कर उनमें से एक को पकड़ना चाहा।

बैल फौरन मुड़ा और अपने नुकीले सींगों से शेर का पेट फाड़ दिया। दूसरा बैल भी दौड़कर आया और शेर को उठाकर दूर फेंक दिया। शेर भाग गया। एक लोमड़ी यह सब देख रही थी। शेर से बोली– ''तुम चिंता न करो। मैं तुम्हें इन दोनों का मांस खिलाऊँगी।''

लोमड़ी ने कुछ दिन बाद एक बैल के कान में कुछ कहा। दूसरे बैल ने उससे पूछा– ''लोमड़ी ने तुम्हारे कान में मेरे बारे में क्या कहा?''

वह बोला– ''पता नहीं क्या फुसफुसाई, मेरी समझ में कुछ नहीं आया।'' बैल को विश्वास नहीं हुआ। वह नाराज़ होकर दूर चला गया। अगले ही दिन शेर ने उसको अकेला पाकर हमला किया और मारकर खा गया। कुछ दिन बाद उसने दूसरे बैल को भी मारकर खा लिया। सच है, अविश्वास का कीड़ा बहुत ज़हरीला होता है।

1. दोनों बैलों को देखकर शेर ने क्या किया?

.....

2. लोमड़ी ने शेर के कान में क्या कहा?

.....

3. दूसरा बैल पहले बैल से क्यों नाराज़ हुआ?

.....

4. इस कहानी से हमें क्या संदेश मिलता है?

.....

आइए करके देखें–

बाग में आम तोड़ते हुए बालकों और गुलाब का फूल तोड़ते एक बालक का चित्र बनाइए।

उत्तरमाला

1. (क) माली ने
   (ख) अच्छा बच्चा बनने का संकल्प किया।
   (ग) भारत का प्रधानमंत्री।
   (घ) फ़ाटक बंद हो गया।
   (ङ) कर्त्तव्य-पालन के लिए।
   (च) बिना चावल एक भी भाई भूखा नहीं रहेगा।
2. (क) 6
   (ख) 7
   (ग) 5
   (घ) 3
   (ङ) 2
   (च) 1
   (छ) 4

3. कु + पुत्र = कुपुत्र

वि + शेष = विशेष

नि + शब्द = नि:शब्द

सु + अवसर = सुअवसर

4. (क) ×

(ख) √

(ग) ×

(घ) √

(ङ) ×

5. स्वयं कीजिए।

6. प्रारंभिक, दुर्दिन, सुयोग्य, प्रपंच, स्वागत

7. स्वयं कीजिए।

पाठ 12

गिरधर की कुंडलियाँ

इस पाठ में गिरधर की कुंडलियाँ दी गई हैं जो दैनिक जीवन के साधारण व्यवहार तथा लोक व्यवहार पर आधारित हैं। ये कुंडलियाँ जीवनोपयोगी हैं। इनमें विनम्रतापूर्वक साधारण व्यवहार करने तथा धन-दौलत की परवाह न करने की सीख मिलती है। आइए, इन कुंडलियों को याद कर लेते हैं।

इस पाठ से हम सीखेंगे

- *लाठी में बहुत गुण होते हैं।*
- *दौलत मिलने पर अभिमान नहीं करना चाहिए।*
- *धन कमाने से बेहतर यश कमाना होता है।*
- *हमें बीती हुई बातों को भुला देना चाहिए।*
- *भूतकाल की अपेक्षा भविष्य की चिंता करना लाभदायक है।*
- *'वचन' और उसके भेदों का ज्ञान।*

पाठ

(1) लाठी में गुण बहुत हैं, सदा राखिये संग।
गहरी नदी, नारा जहाँ, तहाँ बचावै अंग।।
तहाँ बचावै अंग, झपटि कुत्ता को मारै।
दुश्मन दावागीर, ताहू कौ मस्तक झारै।।
कह गिरधर कविराय, सुनो हो पथ के बाठी।
सब हथियार छाँड़ि, हाथ में लीजै लाठी।।

(2) दौलत पाय न कीजिए, सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को, ठाँउ न रहत निदान।।
ठाँउ न रहत निदान, जीत जग में यश लीजै।
मीठे वचन सुनाय, विनय सब की ही कीजै।।
कह गिरधर कविराय, अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निशदिन चारि, रहत सबही के दौलत।।

(3) बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेय।
जो बनि आवै सहज में, ताही में चित देय।।
ताही में चित देय, बात जोई बनि आवै।
दुर्जन हँसे न कोइ, चित में खता न पावै।।
कह गिरधर कविराय, यहैक, मन परतीती।
आगे को सुख समुझि, होई बीती सो बीती।।

इनका मतलब जानिए

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
कुंडली	=	कविता का एक छंद	निदान	=	समाधान
संग	=	साथ	घट तौलत	=	घटता – बढ़ता रहना
नारा	=	नाला	पाहुन	=	मेहमान
दावागीर	=	मज़बूत, बाहुबली	बिसारना	=	भूलना
झारै	=	गिराना	सुधि	=	याद, खोज-खबर
बाठी	=	यात्री, राहगीर	चित	=	चित्त, मन
चंचल	=	चलायमान	खता	=	गलती, दोष
ठाँउ	=	स्थान	परतीती	=	प्रतीति, विश्वास

भावार्थ

1. लाठी में गुण ..... लीजै लाठी।

इस कुंडली में कवि लाठी के गुणों का वर्णन करते हुए कहता है कि हमें लाठी सदा अपने साथ रखनी चाहिए। यह हमें नदी–नाले पार कराने में सहायक होती है। अगर कुत्ता काटने को दौड़े तो लाठी के एक वार से उसे भगाया जा सकता है। रास्ते में अगर कोई बलशाली दुश्मन मिल जाए तो लाठी से उसका सिर फोड़ा जा सकता है। गिरधर कविराय अंत में कहते हैं कि बाकी सब हथियारों को छोड़कर हे राहगीर! अपने हाथ में लाठी रखो।

2. दौलत पाय ..... सब ही के दौलत।

इस कुंडली में कवि दौलत पाने पर घमंड न करने की चेतावनी देता है क्योंकि धन–दौलत एक जगह कभी नहीं रहती। यह जल की तरह चंचल होती है। इसलिए धन कमाना छोड़कर यश कमाना बेहतर है। हमें अपने मीठे वचनों से सबके साथ विनयपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। अंत में गिरधर कविराय कहते हैं कि धन–दौलत एक मेहमान की तरह आती–जाती रहती है। वह तो चार दिन की मेहमान है।

3. बीती ताहि ..... बीती सो बीती।

इस कुंडली में कवि बीती हुई बातों को भूलकर भविष्य की चिंता करने की सलाह देते हैं। जो चीज़ सहज में प्राप्त हो जाए, उसी में ध्यान देना बेहतर है। हमें ऐसा काम करना चाहिए, जिससे कोई हम पर हँसे नहीं। उसका हमें अपने दिल में भी अफ़सोस न हो। अंत में गिरधर कविराय कहते हैं कि हमें अपने मन में यह विश्वास रखना चाहिए कि आगे जो होगा, सो अच्छा ही होगा इसलिए जो बीत गया, उसे बीत जाने दो।

आइए, यह भी जानें

वचन और उसके भेदों का ज्ञान

नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए और समझिए–

1. आज मैं एक रोटी खाऊँगा।
2. इस मेज़ पर बीस किताबें हैं।
3. मैदान में बच्चे खेल रहे हैं।
4. लड़की गाना गा रही है।
5. लड़कियाँ गाना गा रही हैं।

इन वाक्यों में रेखांकित शब्दों, जैसे– एक रोटी, मेज़, बीस किताबें, मैदान, बच्चे, लड़की, गाना, लड़कियाँ आदि से संख्या का बोध होता है। संख्या का बोध 'वचन' कहलाता है।

'वचन' दो प्रकार के होते हैं– एकवचन और बहुवचन।

1. **एक वचन**– जिन शब्दों से किसी 'एक वस्तु' या 'एक व्यक्ति' का बोध होता है, उनको एकवचन कहते हैं। जैसे– लाठी, नाला, कुत्ता, खिड़की, पुस्तक, घोड़ा, बेटा आदि।
2. **बहुवचन**– जिन शब्दों से दो या दो से अधिक संख्या का बोध होता है, उन्हें बहुवचन कहते हैं। जैसे– लाठियाँ, नाले, कुत्ते, खिड़कियाँ, पुस्तकें, घोड़े, बेटे आदि।

- नीचे लिखे एकवचन शब्द से बहुवचन शब्द बनाइए

एकवचन शब्द	बहुवचन शब्द
कमरा	.....
मिठाई	.....

कमीज़ .....

पकौड़ी .....

खाट .....

अभ्यास

1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. लाठी में कौन-कौन से गुण होते हैं?

.....

.....

2. दौलत किसकी तरह चंचल होती है?

.....

.....

3. धन-दौलत किसकी तरह आती-जाती रहती है?

.....

.....

4. बीती बात भुलाकर हमें किसकी सुधि लेनी चाहिए?

.....

.....

5. हमें अपने मन में क्या विश्वास रखना चाहिए?

.....

.....

2. पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

कहा जाता है कि गिरधर कवि का जन्म सन् 1713 में हुआ था। कुछ लोग

इनका जन्म पंजाब में मानते हैं और कुछ लखनऊ के आस-पास। इन्होंने लगभग 500 कुंडलियाँ लिखीं। इनकी कुंडलियों में बिलकुल सीधी-सादी भाषा में जीवनोपयोगी बातों का वर्णन है। कम पढ़े-लिखे लोग इनकी कुंडलियाँ बड़े ध्यान से पढ़ते तथा सुनते हैं। इनको कंठस्थ भी कर लेते हैं। इनकी कुंडलियाँ आम आदमी के जीवन से जुड़ी हैं। इनको सुनने में अधिक मज़ा आता है। घर-गृहस्थी के साधारण व्यवहार और लोक-व्यवहार का वर्णन करने में इन्हें महारत हासिल थी। इसी कारण लोकप्रिय कवियों में इनकी गिनती होती है।

1. गिरधर का जन्म कब हुआ था?

.....

2. उनका जन्म कहाँ माना जाता है?

.....

3. गिरधर ने लगभग कितनी कुंडलियों की रचना की है?

.....

4. गिरधर के लोकप्रिय होने का क्या कारण है?

.....

3. पाठ के आधार पर इन पंक्तियों को पूरा कीजिए–

1. गहरी नदी, नारा जहाँ .....
2. ..... सपने में अभिमान।
3. बीती ताहि बिसारि दे .....।
4. ..... ताही में चित देय।

4. नीचे लिखे शब्दों में से सही शब्द चुनकर खाली स्थानों में भरिए–

गुण हथियार विनय पाहुन सुधि

क. कल मेरे घर में ..... आ गए।

ख. लाठी में बहुत से ..... होते हैं।

ग. हमें अपने से बड़े लोगों के साथ ..... पूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

घ. बीती ताहि बिसार दे, आगे की ..... लेय।

ङ तलवार की तरह कलम भी एक ..... है।

5. सही उत्तर पर सही (√) तथा गलत उत्तर पर गलत (×) का निशान लगाइए–

क. पहली कुंडली में गिरधर कवि ने कहा है कि–

1. लाठी कभी पास नहीं रखनी चाहिए। ( )
2. लाठी रखने पर हम अपनी रक्षा कर सकते हैं। ( )
3. लाठी में बहुत से गुण होते हैं। ( )

ख. दौलत पाने पर कवि सलाह देता है कि–

1. खूब घमंड करना चाहिए। ( )
2. दौलत पाने पर कभी घमंड नहीं करना चाहिए। ( )
3. दौलत जल की तरह चंचल होती है। ( )

ग. बीती हुई बातों को भुला देने से यह लाभ होता है कि–

1. हम भविष्य की चिंता नहीं करते हैं। ( )
2. हमारा दुख कम हो जाता है। ( )
3. दुर्जन हम पर हँसते हैं। ( )

6. **नीचे लिखे शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**

शब्द	वाक्य
दुश्मन	.....
दौलत	.....
हथियार	.....
निशदिन	.....
विश्वास	.....

7. क. वचन किसे कहते हैं और उसके कितने भेद होते हैं?

.....

.....

ख. बहुवचन की क्या पहचान है?

.....

.....

ग. नीचे लिखे बहुवचन शब्दों के एकवचन शब्द बनाइए–

बहुवचन	एकवचन
रेलगाड़ियाँ	.....
नीतियाँ	.....
पुस्तकें	.....
अलमारियाँ	.....
फसलें	.....

करके देखिए

गिरधर या किसी अन्य कवि की कुंडलियाँ, जो आपके जीवन से संबंधित हों तथा अच्छी लगती हों, उन्हें ढूँढिए, लिखिए और याद कीजिए।

आइए, करके देखें

कबीरदास, रहीमदास के दोहों को एकत्र करें तथा उनमें बताए गए मानव मूल्यों की सूची बनाएँ।

.....

.....

.....

.....

.....

उत्तरमाला

1. 1. लाठी नाला पार करने में सहायक होती है तथा कुत्ते को भगाने और दुश्मन पर वार करने में मदद करती है।
   2. दौलत जल की तरह चंचल होती है।
   3. धन-दौलत मेहमान की तरह आती-जाती रहती है।
   4. भविष्य की चिन्ता करनी चाहिए।
   5. हमें अपने मन में यह विश्वास रखना चाहिए कि जो होगा, सो अच्छा ही होगा।
2. स्वयं कीजिए।
3. 1. तहाँ बचावै अंग
   2. दौलत पाय न कीजिए
   3. आगे की सुधि लेय
   4. जो बनि आवै सहज में
4. क. पाहुन
   ख. गुण

ग. विनय

घ. सुधि

ङ. हथियार

5. क. 1. (×)

2. (√)

3. (√)

ख. 1. (×)

2. (√)

3. (√)

ग. 1. (×)

2. (√)

3. (×)

6. स्वयं कीजिए।

7. क. जिन शब्दों से संख्या का बोध हो, उसे वचन कहते हैं। वचन दो प्रकार के होते हैं– एक वचन और बहुवचन।

ख. जिन शब्दों में दो या दो से अधिक संख्या का बोध होता है, उन्हें बहुवचन कहते हैं।

ग.
- रेलगाड़ी
- नीति
- पुस्तक
- अलमारी
- फसल

पाठ 13

शपथ

यह पाठ एक नाटक के रूप में लिखा गया है, जिसमें पर्यावरण को दूषित होने से बचाने के उपाय सुझाए गए हैं। पोलीथिन, कागज, काँच, प्लास्टिक, पत्तियाँ, सब्जी, छिलके अलग-अलग रखकर उनका सही उपयोग कैसे किया जाय, इसे भी दर्शाया गया है। आइए देखें हम इन चीजों का इस्तेमाल कैसे कर सकते हैं।

इस पाठ से हम सीखेंगे

- *हमें जगह-जगह गंदगी नहीं फैलानी चाहिए।*
- *पर्यावरण के प्रति जागरूकता।*
- *परिवेश को साफ़-सुथरा रखना।*
- *धरती हमारी माता है। उसका हमें सम्मान करना चाहिए।*
- *प्रत्यय शब्दों का ज्ञान।*

पाठ

पात्र परिचय

(झील के किनारे मास्टर राजनाथ पच्चीस-तीस बच्चों के साथ खेलकूद में व्यस्त हैं। तभी सुरेश रोता हुआ मास्टर जी के पास आता है।)

राजनाथ– सुरेश, तुम क्यों रो रहे हो?

सुरेश– मास्टर जी, मुझे संगीता ने मारा है।

राजनाथ– पर संगीता ने तुम्हें क्यों मारा?

(राजनाथ संगीता को बुलाते हैं।)

मास्टर जी– संगीता, तुमने सुरेश को क्यों मारा?

संगीता– सर! इसने केले का छिलका रास्ते में फेंक दिया था। फिर संतरे के छिलके कूड़ेदान से निकालकर पॉलीथिन सहित बाहर खड़ी गाय को खिला दिए।

सुरेश– मेरे पापा भी फलों के छिलके गाय को खिलाते हैं सर!

मास्टर जी– हाँ! परन्तु पॉलीथिन के साथ नहीं। क्या तुम नहीं जानते कि पॉलीथिन नष्ट नहीं होती! वह जानवरों के पेट में वैसे ही पड़ी रहती है। इससे उनके पेट का खून रुक जाता है। इससे वे मर जाते हैं।

रजनी– सर! सुरेश ने च्युंगम खाकर मेरे बालों में चिपका दी है। मेरे बाल चिपक गए हैं। अब मैं क्या करूँ?

मास्टर जी– अब करना क्या है। ललिता के पास जाओ। वह धीरे-धीरे तुम्हारे बालों से च्विंगम निकाल देगी। च्विंगम भी घुलती नहीं। वह भी बच्चे थूक देते हैं।

रजनी– सर! क्लास में बच्चे डेस्कों पर च्युंगम चिपका देते हैं। वह कपड़ों पर चिपक जाती है। सर! देखो, किसी ने कूड़ेदान ही गिरा दिया है। कूड़ा झील में चला गया है।

सुरेश– सर! कूड़ा मैंने झील में नहीं फेंका। वह तो राजन फेंक रहा था। कह रहा था कि मछलियों को चारा खिला रहा है। मैं तो उसकी मदद कर रहा था।

मास्टर जी– यह तो और भी अधिक गंदा काम किया है तुमने। (समझाते हुए) जानते हो, इसी झील का पानी यहाँ की बस्ती में रहने वाले लोग पीते हैं। जानवर भी यहाँ आकर पानी पीते हैं। यदि तुम लोग इसमें कूड़ा डालोगे तो क्या उससे पानी गंदा नहीं होगा? गंदे पानी से सब बीमार हो जाएँगे।

ललिता– सर! बच्चों ने पूरे पार्क में कूड़ा फैला दिया है। यह तो ठीक नहीं है न। गंदी चीज़ें कूड़ेदान में डालनी चाहिए।

(मास्टर जी सब बच्चों को बुलाते हैं।)

मास्टर जी– देखो बच्चो, यहाँ से इस पार्क की हालत देखो। जब सुबह हम लोग पिकनिक मनाने आए थे, तब यह पार्क कितना साफ़-सुथरा था। फूल खिले हुए थे। अब देखो, चारों ओर कूड़ा फैला हुआ है। जगह-जगह पॉलीथिन की थैलियाँ फैली हैं। कोल्ड ड्रिंक की खाली बोतलें पड़ी हैं। प्लास्टिक के गिलास पड़े हैं। पौधों को कुचल दिया गया है। कूड़ेदान गिरा दिए गए हैं। ज़मीन पर कूड़ा बिखरा पड़ा है। कैसा लग रहा है?

(सब बच्चे सिर झुकाकर खड़े हो जाते हैं।)

संगीता– सर! आगे से हम यह गलती कभी नहीं करेंगे।

मास्टर जी– देखो! यह धरती हमारी माँ है। क्या कोई अपनी माँ की हालत इस तरह से खराब करता है। यदि हम इस प्रकार गंदगी फैलाएँगे तो सारा वातावरण खराब हो जाएगा।

सभी छात्र– जी सर! सॉरी सर।

मास्टर जी– तुम्हारी यह सज़ा है कि अब तुम सब मिलकर इस पार्क की सफ़ाई करो। जितना कूड़ा है, उसे अलग-अलग करो। सारे कागज़ एक स्थान पर रखो। प्लास्टिक, काँच अलग-अलग छाँट लो। हरा कूड़ा, जैसे– फलों और सब्ज़ियों के छिलके तथा पौधों और पेड़ों की पत्तियाँ एक स्थान पर रखो। जो कूड़ा फिर से प्रयोग होने वाला हो, उसका अलग ढेर बनाओ।

संगीता– इससे क्या होगा सर?

मास्टर जी– जो चीज़ें मिट्टी में आसानी से गल जाती हैं, उनकी खाद बन जाती है। जैसे, फूल, पत्ते, कागज़ और जूट इत्यादि। काँच और प्लास्टिक को गलाकर उनसे नई चीज़ें बनाई जा सकती हैं।

राजन– क्या पॉलीथिन को दोबारा प्रयोग में नहीं लाया जा सकता?

मास्टर जी– नहीं, पॉलीथिन की थैलियाँ न तो गलती हैं, मिट्टी में दबाने पर समाप्त होतीं हैं। जलाने पर प्रदूषण फैलाती हैं। बहा देने पर नालियों और नालों को रोककर गंदगी और बीमारियों का कारण बनती हैं। यदि कोई जानवर इन्हें खा ले, तो ये उसके पेट में जमा होती रहती हैं। पचती नहीं है। इससे पशुओं की मृत्यु हो जाती है, इसीलिए देश के अनेक स्थानों पर इनके प्रयोग पर रोक लगा दी गई है। कुछ स्थानों पर इनका प्रयोग सड़क बनाने के लिए किया जाने लगा है।

संगीता– सर! आज तो पिकनिक के साथ-साथ आपने हमें वातावरण को साफ़-सुथरा रखने का पाठ भी पढ़ा दिया।

मास्टर जी– सब लोग वायदा करो कि आगे से इस प्रकार वातावरण को दूषित करने की गलती नहीं करेंगे।

सुरेश– सर! मैं तो च्विंगम खाना ही बंद कर दूँगा।

संगीता– सर! मैं भी इधर-उधर छिलके नहीं फेंकूँगी।

(मास्टर जी शपथ दिलाते हैं।)

समवेत स्वर–''हम सब पॉलीथिन की थैलियों का प्रयोग आज से ही बंद करने की शपथ लेते हैं।''

(सभी लोग लौटने की तैयारी में व्यस्त हो जाते हैं।)

इनका मतलब जानिए–

शब्द		अर्थ
व्यस्त	=	किसी काम में लगा होना
कूड़ेदान	=	कचरा डालने वाला डिब्बा
पर्यावरण/वातावरण	=	आस-पास का माहौल
प्रदूषण	=	गंदगी
शपथ	=	कसम

आइए, यह भी जानें

शब्दांश के रूप में प्रत्यय का ज्ञान

शब्दों के अंश को हम 'शब्दांश' कहते हैं। जो शब्दांश किसी मूल शब्द के बाद में जुड़कर शब्द का रूप और अर्थ बदल देते हैं उन्हें 'प्रत्यय' कहते हैं।

जैसे – सुन्दर + ता = सुन्दरता, बच्चा + पन = बचपन, प्रकृति + इक = प्राकृतिक, भारत + ईय = भारतीय, बन्धु + त्व = बन्धुत्व, सब्ज़ी + वाला = सब्ज़ीवाला। स्पष्ट है कि मूल शब्द 'सुन्दर' में शब्दांश 'ता' जोड़कर 'सुन्दरता' शब्द बना है। इसी प्रकार 'बच्चा' में 'पन' जुड़कर 'बचपन', 'प्रकृति' में 'इक' जोड़कर 'प्राकृतिक', 'भारत' में 'ईय' जोड़कर 'भारतीय', 'बन्धु' में 'त्व' जोड़कर 'बन्धुत्व' तथा 'सब्ज़ी' में 'वाला' जोड़कर 'सब्ज़ीवाला' शब्द बने हैं। अतः ता, पन, इक, ईय, त्व तथा वाला आदि शब्दांश प्रत्यय हैं।

कुछ और सीखिए और समझिए

1.

	प्रत्यय		शब्द
(क)	वाला	=	घोड़ेवाला, दूधवाला
(ख)	इक	=	नैतिक, शारीरिक
(ग)	ता	=	कुरूपता, बुद्धिमत्ता
(घ)	ई	=	चीनी, दानी
(ङ)	त्व	=	मातृत्व, अपनत्व

2. शब्दों में से मूल शब्द और प्रत्यय अलग करना सीखिए–

	शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
(क)	थकान	=	थक	+	आन
(ख)	गाड़ीवान	=	गाड़ी	+	वान
(ग)	पढ़ाई	=	पढ़	+	आई
(घ)	लड़कपन	=	लड़का	+	पन

3. निम्नलिखित प्रत्ययों से दो-दो शब्द बनाइए–

	प्रत्यय	शब्द
(क)	वाला	फलवाला, फूलवाला

(ख) आऊ .....

(ग) ई .....

(घ) कार .....

(ङ) आनी .....

4. निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्द और प्रत्यय अलग-अलग करके लिखिए–

	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
(क)	पत्रकार	पत्र	कार
(ख)	वीरता	.....	.....
(ग)	भारतीय	.....	.....
(घ)	शक्तिमान	.....	.....
(ङ)	मानवता	.....	.....

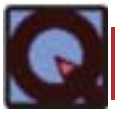

अभ्यास

1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) इस नाटक के चार पात्रों के नाम लिखिए।

.....

(ख) छात्रों ने किन फलों के छिलके फेंके?

.....

(ग) गंदी चीज़ें कहाँ फेंकनी चाहिए?

.....

(घ) हमारा पर्यावरण कैसे प्रदूषित हो रहा है?

.....

(ङ) बच्चों ने क्या शपथ ली?

.....

2. पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

एक राजा था। उसके राज्य में खूब जंगल थे। उसने जंगल कटवाकर अपना खज़ाना भरना शुरू कर दिया।

एक रात की बात है। राजा ने सपना देखा– उसके महल में आग लग गई है। सारा महल जलकर खाक हो गया है। रानी और राजकुमार दर-दर भटक रहे हैं। तभी उसके सामने वनदेवी प्रकट हुईं। वनदेवी ने कहा–''अपना महल जलने पर दुख हो रहा है न! रानी और राजकुमार को लेकर भटक रहे हो। पर तुम अंधाधुंध जंगल कटवाते जा रहे हो। वहाँ रहने वाले जीव-जन्तु मेरे बच्चे हैं। जंगल कटने से उनका घर उजड़ रहा है। वे कहाँ रहेंगे? कभी सोचा तुमने?''

उसी समय राजा की नींद खुल गई। उसने अगले ही दिन से पेड़ों का कटान रुकवा दिया। नए पौधे लगाने का आदेश दिया।

(क) राजा जंगल क्यों कटवा रहा था?

.....

(ख) राजा के सपने में कौन देवी प्रकट हुईं?

.....

(ग) जंगल कटने से किसके घर उजड़ते हैं?

.....

(घ) नींद से जागने के बाद राजा ने क्या किया?

.....

3. सही उत्तर पर सही (√) का निशान लगाइए–

(क) संवाद क्या होता है?

1. भाषण।
2. लेख।
3. दो या दो से अधिक लोगों की बातचीत।

(ख) नाटक–

1. केवल पढ़ा जाता है।
2. केवल देखा जाता है।
3. पढ़ा और देखा जाता है।

(ग) नाटक खेलने के लिए ज़रूरत पड़ती है–

1. मंच की।
2. खेल के मैदान की।
3. एक बड़ी दुकान की।

4. नीचे लिखे शब्दों को रेखा खींचकर आपस में मिलाइए–

पर्यावरण	सिखाने वाला
कूड़ेदान	खाद
हरा कूड़ा	हमारे आस-पास का माहौल
मास्टर जी	वह, बर्तन जिसमें कूड़ा डालते हैं

5. नीचे लिखे शब्दों को खाली स्थानों में भरिए–

पॉलीथिन, छिलका, मिट्टी, कूड़ा, झील

(1) इसने केले का ..... रास्ते में फेंक दिया।

(2) बच्चों ने पूरे पार्क में ..... फैला दिया है।

(3) इस ..... का पानी बस्ती में रहने वाले लोग पीते हैं।

(4) ..... नष्ट नहीं होती।

(5) फूल, पत्ते और कागज़ ..... में आसानी से गल जाते हैं।

6. (क) प्रत्यय किसे कहते हैं?

.....

.....

(ख) नीचे लिखे प्रत्ययों से नए शब्द बनाइए–

प्रत्यय	नए शब्द
ता	सुन्दरता
इक	.....
वाला	.....
कार	.....
ई	.....

(ग) नीचे लिखे शब्दों में से मूल शब्द तथा प्रत्यय को अलग-अलग करके लिखिए–

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
शक्तिशाली	शक्ति	शाली
शिल्पकार	.....	.....

मानवता	.....	.....
बचपन	.....	.....
गंदी	.....	.....

आइए, करके सीखें

(क) अपनी समझ से मिट्टी में गलने वाली चीजों की एक सूची बनाइए–

.....

.....

.....

.....

(ख) पर्यावरण जागरूकता के लिए अपने गाँव में इस नाटक को खेलिए।

उत्तरमाला

1. क. राजनाथ, सुरेश, संगीता, रजनी

   ख. केले और संतरे के छिलके

   ग. कूड़ेदान में

   घ. गंदगी फैलाने से

   ङ पॉलीथिन की थैलियों का प्रयोग बंद करने की।

2. स्वयं कीजिए

3. क. (3)

   ख. (3)

   ग. (1)

4. पर्यावरण – हमारे आस-पास का माहौल

   कूड़ेदान – वह बर्तन, जिसमें कूड़ा डालते हैं

   हरा कूड़ा – खाद

   मास्टर जी – सिखाने वाला

5. 1. छिलका

   2. कूड़ा

   3. झील

   4. पॉलीथिन

   5. मिट्टी

6. क. जो शब्दांश किसी मूल शब्द के बाद में जुड़कर शब्द का रूप और अर्थ बदल देते हैं, उन्हें 'प्रत्यय' कहते हैं।

ख. ऐतिहासिक दूधवाला सरकार सफाई

ग. शिल्प कार

मानव ता

बच्चा पन

गंद ई

पाठ 14

पत्र-लेखन

पत्र लेखन एक कला है। उसमें नम्रता, सहृदयता, आत्मीयता महत्त्वपूर्ण है, इसे कैसे दिखाया जाए? पत्र लिखने के तरीके तथा उनके प्रकार भी इस पाठ में बताये गये हैं। आइए पत्र लिखना सीखें।''

इस पाठ से हम सीखेंगे

- *आवेदन पत्र लिखने का तरीका।*
- *आवेदन पत्र का प्रारम्भ करना।*
- *आवेदन पत्र के सार को विषय के रूप में लिखना।*
- *आवेदन पत्र के उद्देश्य और विवरण को लिखना।*
- *आवेदन पत्र का समापन करना।*
- *आवेदन पत्र का अर्थ जानना।*
- *विराम चिह्नों की पहचान और उनका प्रयोग करना।*

आइए, प्रारम्भ करें

पत्र लिखना एक कला है। पत्र मन के भावों को शब्दों में लिखकर व्यक्त करने का सरल और सहज तरीका होता है। एक अच्छा पत्र वह होता है, जिसमें पत्र लिखे जाने वाले व्यक्ति या अधिकारी के प्रति सम्बोधन से शिष्टाचार प्रकट होता है, जैसे– प्रिय, महोदय, आदरणीय आदि। विषय के अन्तर्गत आवेदन पत्र का सार लिखना चाहिए। आवेदन पत्र में उद्देश्य और विवरण को लिखना उपयोगी होता

है। पत्र समाप्त करने पर अभिवादन तथा 'आपका', 'आपकी', 'भवदीय', 'भवदीया' आदि शब्दों का प्रयोग भी शिष्ट आचरण को दर्शाता है। यह पत्र लिखने वाले के प्रति एक सहज आत्मीयता का भाव पैदा करता है।

एक अच्छे पत्र में नीचे लिखी बातों का ध्यान रखना चाहिए–

क. पत्र की भाषा सरल होनी चाहिए।

ख. विचार स्पष्ट और संक्षिप्त होने चाहिए।

ग. पत्र में नम्रता और सहृदयता के भाव होने चाहिए ताकि पढ़ने वाले पर उसका अच्छा प्रभाव पड़े।

पत्र के प्रकार

पत्र तीन प्रकार के होते हैं–

1. सामाजिक पत्र
2. सरकारी/व्यावसायिक पत्र
3. आवेदन पत्र

इस पाठ में हम एक अच्छा आवेदन पत्र लिखने की कला सिखा रहे हैं। इसे आप ध्यान से पढ़िए, समझिए और व्यवहार में लाइए।

सेवा में,

श्रीमान प्रधान जी,
ग्राम सभा – महुआ खुर्द।
जिला – बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश।

विषय : ग्राम सभा के अन्तर्गत सरकारी सस्ते गल्ले की दुकान खोलने के संबंध में।

महोदय,

अवगत कराना है कि मैं, श्रीमती विमला सिंह, पत्नी स्वर्गीय श्री दीवान सिंह, निवासी महुआखुर्द, एक सैनिक की साक्षर विधवा हूँ। मैं अपने परिवार के भरण–पोषण हेतु स्वरोजगार करना चाहती हूँ। आप जानते हैं कि हमारी ग्राम सभा में सरकारी सस्ते गल्ले की कोई दुकान नहीं है। मेरी जानकारी में किसी व्यक्ति ने दुकान खोलने के लिए आवेदन नहीं किया है। गाँव में सस्ते गल्ले की दुकान न होने से गाँववालों को दूसरे गाँव जाकर राशन लाना पड़ता है, इससे गाँव के लोगों को परेशानी होती है। कई बार तो उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ता है।

मैं, आपकी मदद से गाँव में ही सस्ते गल्ले की दुकान खोलना चाहती हूँ। इससे गाँववालों को भी सहूलियत होगी। अतः आपसे निवेदन है कि इस बारे में उचित कार्यवाही करें। मैं, सभी नियमों और शर्तों को पूरा करने के लिए तैयार हूँ। आपके इस सहयोग के लिए मैं सदैव आपकी आभारी रहूँगी।

भवदीया,

विमला सिंह
पत्नी स्वर्गीय दीवान सिंह
ग्राम सभा – महुआ खुर्द
जिला – बुलन्दशहर
उत्तर प्रदेश

दिनांक : 19 नवम्बर, 2012

पत्र लिखने का तरीका

व्यक्तिगत या सामाजिक पत्र

1. सबसे ऊपर बाईं ओर लिखने वाले का पता
2. दिनांक

3. पत्र प्राप्त करने वाले के साथ संबंध के अनुसार संबोधन
4. पत्र प्राप्त कर्त्ता के साथ संबंध के साथ अभिवादन
5. प्रत्येक अनुच्छेद में पत्र लिखने का कारण
6. एक या दो अनुच्छेदों में विषय विस्तार
7. पत्र प्राप्त करने वाले के साथ संबंध
8. पता

इनका मतलब जानिए

शब्द		अर्थ
आवेदन पत्र	=	किसी कार्य अथवा उद्देश्य को पूरा किए जाने के लिए लिखा जाने वाला पत्र
सम्बोधन	=	आदर सूचक शब्द का प्रयोग
शिष्टाचार	=	सभ्य व्यवहार
आत्मीयता	=	लगाव
स्वर्गीय	=	जिसकी मृत्यु हो गई हो
स्वरोजगार	=	खुद का रोजगार
अभिवादन	=	प्रणाम, नमस्कार, नमस्ते
विवरण	=	ब्यौरा, विस्तृत वर्णन
सहृदयता	=	अपनापन, प्रेम
शिष्ट	=	तहज़ीब वाला
आचरण	=	चरित्र, चाल चलन
आत्मीयता	=	अपनापन

आइए, यह भी जानें

विराम चिह्नों की पहचान और उनका प्रयोग करना सीखिए–

विराम चिह्नों की सहायता से बोलने, पढ़ने और अर्थ समझने में बहुत सुविधा होती है।

हिन्दी में प्रयोग होने वाले प्रमुख विराम चिह्न और सामान्यत: वाक्य में उनके प्रयोग के स्थान का विवरण इस प्रकार है–

विराम-चिह्न का नाम	चिह्न	प्रयोग का स्थान
पूर्ण विराम	(।)	वाक्य के अन्त में
अल्प विराम	(,)	वाक्य के मध्य में
अर्द्ध विराम	(;)	शब्द और वाक्य के मध्य में
प्रश्न वाचक	(?)	प्राय: वाक्य के अंत में
विस्मय सूचक	(!)	शब्द या वाक्यांश के बाद

इन विराम-चिह्नों के प्रयोग के बारे में जानिए–

1. पूर्ण विराम– पूर्ण विराम (।) का प्रयोग वाक्य के अंत में किया जाता है। जैसे– पत्र लिखना एक कला है।
2. अल्प विराम– अल्प विराम (,) का प्रयोग वहाँ होता है, जहाँ सबसे कम देर रुककर शब्द या वाक्यांश का उच्चारण अलग करने की ज़रूरत पड़ती है, जैसे– मैं, श्रीमती विमला सिंह, पत्नी स्वर्गीय श्री दीवान सिंह, निवासी महुआ खुर्द, एक सैनिक की साक्षर विधवा हूँ। पत्र के सम्बोधन और भवदीय आदि में भी अल्प विराम लगाया जाता है।

3. अद्‌र्ध विराम– वाक्य में जहाँ पूर्ण विराम से कम किन्तु अल्प विराम से अधिक ठहरना पड़ता है, वहाँ अर्द्ध विराम (;) का प्रयोग होता है। यह कई शब्दों के बाद या दो वाक्यों के बीच में, जैसे– सुबह जल्दी उठो; कसरत करो; अच्छी खुराक लो; स्वास्थ्य कैसे न सुधरेगा!

4. प्रश्न वाचक चिह्न– प्रश्न पूछने वाले वाक्यों के अंत में प्रश्न सूचक चिह्न (?) का प्रयोग किया जाता है। जिन वाक्यों में कौन, कब, क्यों, कहाँ, कैसे, क्या तथा किस का प्रयोग होता है, उन वाक्यों के अंत में प्रश्न वाचक चिह्न लगाया जाता है, जैसे–आप वहाँ क्यों जा रहे हैं?

5. विस्मय सूचक चिह्न– जिन वाक्यों में आश्चर्य, खुशी, शोक, घृणा, क्रोध आदि के भाव प्रकट होते हैं, उनके अंत में विस्मय बोधक (!) चिह्न का प्रयोग किया जाता है, जैसे– अहा! कितना सुहाना मौसम है।

अभ्यास

1. सही उत्तर पर निशान लगाइए और उसे लिखिए–

अ. आवेदन पत्र की शुरुआत होती है–

(क) सीधे विषय का वर्णन करके। ☐

(ख) संबोधन और अभिवादन करके। ☐

(ग) अपने बारे में जानकारी देते हुए। ☐

ब. आवेदन पत्र का मुख्य विषय लिखा जाता है–

(क) शुरू में। ☐

(ख) मध्य में। ☐

(ग) अंत में। ☐

स. आवेदन पत्र का समापन करते हैं–

(क) विषय से हटकर कुछ बताते हुए। ☐

(ख) अभिवादन करते हुए। ☐

(ग) अपने नाम का उल्लेख करके। ☐

2. नीचे दिए गए शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करें–

(क) आवेदन पत्र : .....

(ख) स्वरोजगार : .....

(ग) भरण–पोषण : .....

(घ) आभारी : .....

3. नीचे लिखे शब्दों को उचित स्थानों में भरिए–

सम्बोधन, उद्देश्य, विषय, सहूलियत

(क) आवेदन पत्र का प्रारम्भ ..... से करना चाहिए।

(ख) आवेदन पत्र में ..... और विवरण लिखना उपयोगी होता है।

(ग) ..... के अंतर्गत आवेदन पत्र का सार लिखना चाहिए।

(घ) इससे गाँववालों को भी ..... होगी।

4. नीचे लिखे वाक्यों के सामने सही (√) अथवा गलत (×) का चिह्न लगाइए:

1. आवेदन पत्र का प्रारम्भ संबोधन से करना चाहिए। ( )
2. आवेदन पत्र के सार को विषय के रूप में नहीं लिखना चाहिए। ( )
3. आवेदन पत्र का मुख्य विषय अंत में लिखा जाता है। ( )
4. आवेदन पत्र की शुरुआत सीधे विषय का वर्णन करके होती है। ( )
5. आवेदन पत्र में सबसे ऊपर पत्र प्राप्त करने वाले का नाम व पता लिखते हैं। ( )

5. नीचे दिए गए विराम चिह्नों के पहचान चिह्न लिखिए–

	विराम चिह्न का नाम	चिह्न
1.	अल्प विराम	( )
2.	विस्मय सूचक	( )
3.	पूर्ण विराम	( )
4.	प्रश्न वाचक	( )
5.	अर्द्ध विराम	( )

6. निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम चिह्न लगाइए–

(क) मैं श्रीमती विमला पत्नी स्वर्गीय श्री दीवान सिंह निवासी महुआ खुर्द एक सैनिक की साक्षर विधवा हूँ।

(ख) लाल किला संसद भवन इण्डिया गेट नार्थ ब्लाक कुतुब मीनार जैसी इमारतें नई दिल्ली में हैं

(ग) आप कहाँ से आए हैं

(घ) वाह कैसा अद्भुत दृश्य है

आइए, करके देखें

- अपनी ग्राम सभा के प्रधान जी को छात्रवृत्ति (वज़ीफा) दिलाने के लिए आवेदन पत्र लिखिए।
- गाँव में अपना रोज़गार शुरू करने के लिए आर्थिक सहायता हेतु खण्ड विकास अधिकारी को पत्र लिखिए।
- गाँव में नियमित डाक वितरण न होने पर डाकपाल को शिकायती पत्र लिखिए।

उत्तरमाला

1. अ. ख
   ब. क
   स. ग
2. स्वयं कीजिए।
3. (क) सम्बोधन
   (ख) उद्देश्य
   (ग) विषय
   (घ) सहूलियत
4. 1. √
   2. ×
   3. ×
   4. √
   5. √

5. 1. (,)

2. (!)

3. (।)

4. (?)

5. (;)

6. (क) मैं, श्रीमती विमला, पत्नी स्वर्गीय श्री दीवान सिंह, निवासी महुआ खुर्द, एक सैनिक की साक्षर विधवा हूँ।

(ख) लाल किला, संसद भवन, इण्डिया गेट, नार्थ ब्लॉक, कुतुब मीनार जैसी इमारतें नई दिल्ली में हैं।

(ग) आप कहाँ से आए हैं?

(घ) वाह! कैसा अद्‌भुत दृश्य है!

जाँच पत्र-4

(पाठ 11 से 14 तक)

समय-2 घंटा

कुल अंक - 40

1. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। उनके सही अर्थ पर निशान लगाइए–

क. पुरस्कार

(1) संघर्ष (2) इनाम

(3) कठिनाई का सामना (4) परेशानी

ख. सुधि

(1) संघर्ष (2) सीधा होना

(3) खोज-खबर (4) साधना

ग. पाहुन

(1) पत्थर (2) मेहमान

(3) एक गहना (4) पहनना

घ. शपथ

(1) लथपथ होना (2) कसम

(3) शाप देना (4) एक तरह का साँप

2. नीचे लिखे शब्दों को वाक्यों के खाली स्थानों में भरिए–

गुण उद्देश्य अनुरोध

1. शास्त्री जी ने चावल का कम प्रयोग करने का ..... किया।
2. लाठी में ..... बहुत हैं, सदा राखिए संग।
3. आवेदन पत्र में ..... और विवरण लिखना उपयोगी होता है।

3. नीचे लिखे वाक्यों के सामने सही (√) या गलत (×) का चिह्न लगाइए–

क. लाल बहादुर शास्त्री गरीबों की बहुत चिंता करते थे। ( )

ख. दौलत पाकर सपने में भी अभिमान नहीं करना चाहिए। ( )

ग. नाटक पढ़ने के साथ-साथ खेला भी जाता है। ( )

घ. आवेदन पत्र की शुरुआत सीधे विषय वर्णन से होती है। ( )

4. नीचे लिखे कथनों के सही उत्तर पर (√) का निशान लगाइए–

क. शास्त्री जी ने कर्त्तव्य-परायणता के लिए फाटकवाले को–

1. थप्पड़ मारा 2. इनाम दिया 3. अपने घर बुलवाया।

ख. धन-दौलत–

1. चार दिन की मेहमान होती है। 2. स्थायी रहती है।
3. कष्ट देती है।

ग. एक अच्छा नाटक–

1. गाया जाता है। 2. केवल पढ़ा जाता है।
3. पढ़ा और खेला जाता है।

घ. आवेदन पत्र के मुख्य विषय का वर्णन लिखा जाता है–

1. शुरू में 2. मध्य में 3. अंत में

5. अ. नीचे लिखे शब्दों में उपसर्ग छाँटकर लिखिए–

सम्मान .....

अतिथि .....

निदान .....

आवेदन .....

5 ब. नीचे लिखे एकवचन शब्दों के बहुवचन लिखिए–

बच्चा .....

लाठी .....

सैनिक .....

नियम .....

6. नीचे लिखे वाक्यों में विराम चिह्न लगाइए–

क. राम बाज़ार गया वहाँ उसे मोहन मिला

ख. इस कमरे में एक अलमारी दो मेज एक टेलीफ़ोन और चार कुर्सियाँ हैं

ग. तुम यहाँ क्या कर रहे हो

घ. अरे यह चोट कैसे लगी

7. नीचे लिखे शब्दों को उनके अर्थों से जोड़िए–

निर्दोष	विश्वास
स्वर्गीय	पढ़ा-लिखा
बिसारना	बेकसूर
साक्षर	मृत
परतीती	भूलना

8. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में दीजिए–

1. क्या लाल बहादुर शास्त्री ने आम तोड़े?
2. क्या धन को छोड़कर यश के पीछे दौड़ना उचित है।
3. क्या विमला ने राशन की दुकान के लिए आवेदन पत्र लिखा?

9. नीचे लिखे शब्दों में से प्रत्यय छाँटकर लिखिए–

शब्द	प्रत्यय
गरीबी	.....
गुणवान	.....
आत्मीयता	.....

10. नीचे लिखे सभी प्रश्नों के उत्तर एक-एक पंक्ति में दीजिए–

क. लाल बहादुर शास्त्री ने चावल न खाने का अनुरोध क्यों किया?

.....

ख. दौलत किसकी तरह चंचल होती है?

.....

ग. शपथ नाटक का क्या उद्देश्य है?

.....

घ. आवेदन पत्र में प्रार्थी अपना नाम कहाँ लिखता है?

.....

11. चारों ओर कूड़ा कहाँ फैला हुआ था?

.....

12. मीठे वचन बोलने से क्या लाभ होता है?

.....

13. एक अच्छे पत्र की भाषा कैसी होनी चाहिए?

.....

14. नीचे लिखे शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

भरण–पोषण .....

पाहुन .....

अडिग .....

15. सचिव, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान को अपनी पाठ्य पुस्तकें मँगवाने के लिए एक आवेदन पत्र लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....